टीकाकरण को बढ़ावा देना

धार्मिक /आस्था समुदायों के सहयोग के लिए टूलकिट

MOMENTUM Country and Global Leadership

दिसंबर, 2022

MOMENTUM सरकारों, स्थानीय तथा अंतराष्ट्रीय तथा सिविल सोसाइटी संस्थाओं, तथा अन्य स्टेकहोल्डर्स के साथ मातृ, नवजात तथा बाल स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार के लिए कार्य करता है। मौजूदा साक्ष्यों तथा वैश्विक स्वास्थ्य कार्यक्रमों व गतिविधियों के आधार पर हम नए विचारों, साझेदारियों, दृष्टिकोणों तथा स्वास्थ्य तंत्र के लचीलेपन को मज़बूत बनाने के लिए कार्य करते हैं।

इस टूलकिट का निर्माण U.S. Agency for International Development (USAID) के माध्यम से अमेरिकी नागरिकों के उदारतापूर्ण सहयोग से पूर्ण हो सका है जो कि Jhpiego तथा अन्य सहयोगियों की अगुवाई में सहयोगी समझौते #7200AA20CA00002 की शर्तों के तहत हुआ है। इस टूल किट की पाठ्य सामग्री का उत्तरदायित्व MOMENTUM Country and Global Leadership का है तथा USA सरकार या USAID का मत प्रतिबिंबित नहीं करती है।

मुख्य पृष्ठ की तस्वीर: Frank Kimaro/Jhpiego, John Snow India Pvt. Ltd./Jhpiego, Kate Holt/MCSP, and Karen Kasmauski /MCSP

सूचित उद्धरण

MOMENTUM. *Promoting Vaccination: A Toolkit for Collaborating with Faith Communities*. 2022. Washington, DC: USAID MOMENTUM.

विषय सूची

स्वीकृतियां ... 3
टूलकिट का परिचय ... 4
  पृष्ठ्भूमि एवं परिचय ... 4
  टूलकिट के अपेक्षित उपयोगकर्ता ... 6
  धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन - टीकाकरण के पैरोकार तथा प्रभावीजन के तौर पर ... 6
  टीकाकरण की पृष्ठभूमि ... 7
टीकाकरण सम्बन्धी धार्मिक आयाम ... 10
  सभी धर्मों के परिप्रेक्ष्य में टीकाकरण सम्बन्धी सामान्य शंकाओं का निवारण ... 10
  ईसाई धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [1,6,8,13,16,17,18] ... 11
  इस्लाम धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [2,8,13] ... 12
  हिन्दू धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [8,12,13] ... 13
टीकाकरण पर चर्चा के लिए मार्गदर्शन ... 14
  टीकाकरण को बढ़ावा देने के प्रमुख कारक ... 14
  वैक्सीन पर विश्वास की मानसिकता /माइंडसेट ... 15
  एक सन्देश फ्रेमवर्क /ढांचा तैयार करना ... 16
  टीकाकरण सन्देश के व्यापक /समग्र सिद्धांत ... 17
  सामान्य भ्रामक और गलत जानकारियों को सम्बोधित करना ... 18
सोशल मीडिया पर सन्देश ... 21
  अभियान विवरण ... 21
  ईसाई धर्म से सम्बंधित सन्देश ... 21
  मुस्लिम धर्म से सम्बंधित सन्देश ... 22
  हिन्दू धर्म से सम्बंधित सन्देश ... 23
  सोशल मीडिया हेतु मार्गदर्शन ... 24
संलग्नक /एनेक्सचर ... 25
  संलग्नक /एनेक्सचर -1 : टीकों को बढ़ावा देने के लिए अंतर्धार्मिक परिचर्चा ... 25
  संलग्नक /एनेक्सचर -2 : संगतपूर्ण अन्तर्धार्मिक टीकाकरण अभियान के लिए निर्देश ... 27
  संलग्नक /एनेक्सचर-3: धर्म /आस्था आधारित वैज्ञानिक तकनीकि संस्थाए /निकायों को जोड़ने के लिए निर्देश ... 29
  संलग्नक /एनेक्सचर-4: सन्दर्भ सूची: टीकों के प्रति संकोच /हिचकिचाहट ... 32

स्वीकृतियां

MOMENTUM Country and Global Leadership, विश्व के साझेदार देशों में स्वैच्छिक परिवार नियोजन, मातृ व बाल स्वास्थ्य के समग्र सुधार हेतु U.S. Agency for International Development (USAID) द्वारा वित्तपोषित नवाचार /अभिनव कार्यक्रम का एक भाग है। यह परियोजना साझेदार देशों के स्वास्थ्य मंत्रालयों व अन्य सहयोगियों के क्षमता विकास में तकनीकि सहयोग प्रदान करता है।

टूलकिट का परिचय

पृष्ठ्भूमि एवं परिचय

टीकाकरण वैश्विक स्वास्थ्य एवं विकास के श्रेष्ठतम उपलब्धियों में से एक है। एक समय की विश्व की भयावह बीमारियों यथा पोलियो, खसरा, चेचक (स्मॉलपॉक्स) आदि का विश्व के लगभग सभी क्षेत्रों से उन्मूलन, टीकाकरण के द्वारा ही संभव हो सका, जिसके कारण प्रति वर्ष लाखों लोगों की जान बचायी जा सकी, जिसे कि टीके नहीं होने के कारण पहले के वर्षों में नहीं बचाया जा सका था ।.[17] बच्चों को बीमारियों से बचाने और समुदाय की वृद्धि व् विकास के लिए टीके (वैक्सीन) एक सुरक्षित एवं प्रभावी माध्यम हैं। वैश्विक कल्याण के लिए टीके सर्वाधिक कम खर्चीले साधन हैं। .[17]

टीकाकरण के असाधारण लाभों के बावजूद भी विश्व के कुछ क्षेत्रों की जनसंख्या - जिसमें प्रायः अत्यधिक गरीब , दूर दराज़ में रहने वाले, उपेक्षित वर्ग, संघर्षरत समूह या जोखिम की स्थिति में रहने वाले लोग सम्मिलित हैं, को जीवनरक्षक टीके नहीं लग पाते।. टीकाकरण का निम्न स्तर वैश्विक मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य , शिक्षा तथा गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य प्राप्ति में बाधा डालता है। पिछले 2 दशकों [20] से टीकाकरण का स्तर 85 % पर स्थिर है और कोविड -19 महामारी के दौरान टीकाकरण का स्तर गिरने लगा है, अतः यह आवश्यक हो गया है कि टीकाकरण से जुड़े सभी सहभागी एवं प्रभावी स्टेकहोल्डर्स सबसे वंचित समुदायों में टीकाकरण अभियान को गति प्रदान करें।

वर्ष 2019 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने टीकाकरण को अपनाने के लिए संकोच /हिचकिचाहट को सबसे बड़े खतरों में एक माना है।[17] सामाजिक और संचार के परिप्रेक्ष्य में , एक ओर जहाँ गलत जानकारियां एवं मीडिया के तेजी से बदलते स्वरूप व्याप्त हैं, वहीँ दूसरी ओर टीकाकरण के बढ़ते उपयोग के कई प्रभावी उदाहरण हैं। . टीकाकरण को बढ़ाने और टीकाकरण में आने वाली बाधाओं को कम करने हेतु कई साक्ष्य उभर कर आए हैं। टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक व् कारगर गतिविधियों की आवश्यकता है। एक ओर जहाँ कुछ लोगों के लिए जीवन रक्षक टीकों की उपलब्धता एक चुनौती बनी हुयी है, वहीं दूसरी ओर टक्कों के प्रति अविश्वास भी एक प्रमुख वैश्विक बाधा बना हुआ है।

टीकों के प्रति अविश्वास/ संकोच को कम करने तथा इसके उपयोग व् मांग को बढ़ाने में धार्मिक नेता एवं स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन एक अद्वितीय भूमिका निभा सकते हैं। टीकों के प्रति अविश्वास व संकोच /हिचकिचाहट के चाहे धार्मिक कारण हों, भ्रांतिया हों, गलत जानकारियां हों, कोई अन्य ठोस कारण या भय हो, स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन टीकाकरण की मांग को बढ़ाने में काफी प्रभावी सिद्ध हुए हैं। पिछली शताब्दी में टीकाकरण को अपने अपने समुदायों में बढ़ावा देने में इन स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन ने प्रभावशाली भूमिका निभाई है। [5, 13]

यह टूलकिट USAID मोमेंटम कंट्री एंड ग्लोबल लीडरशिप प्रोजेक्ट के सहयोग से बनायी गयी है, जिसका उद्देश्य धार्मिक नेताओं एवं स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों में टीकों के प्रति व्याप्त सरोकारों / चिंताओं को दूर करना है । वर्ष 2020 से 2021 तक, इस परियोजना /प्रोजेक्ट के अंतर्गत विश्व स्तर पर प्रमुख लोगों /धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों से चर्चा कर उनके विचारों व् सुझावों का विश्लेषण किया गया।. उक्त विश्लेषण के आधार पर इस टूलकिट को बनाया गया जिसमें व्यवहारिक सुझावों तथा निष्कर्षों को समाहित किया गया ताकि धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों द्वारा इस टूलकिट का प्रयोग कर उनके समुदायों में टीकाकरण के प्रति व्याप्त अविश्वास, भ्रांतियों को दूर किया जा सके तथा टीकाकरण की मांग को बढ़ाया जा सके। उन धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के साथ गहन परिचर्चा कर उनके सुझावों को इस टूलकिट में समाहित किया गया ताकि धार्मिक समुदायों में टीकाकरण की मांग व उपयोग को बढ़ाया जा सके।

यह टूलकिट धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों तथा सम्बंधित स्टेकहोल्डर्स यथा - स्वास्थ्य मंत्रालय, चिकित्स्कीय एवं वैज्ञानिक संस्थानों, टीकाकरण पर व धार्मिक समुदायों के साथ कार्यरत समाज सेवी संस्थाओं के उपयोग के लिए बनायी गयी है ताकि टीकाकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने , भ्रान्तियों को कम करने, व टीकाकरण के प्रति अविश्वास /संकोच को कम करने में इस टूलकिट में दी गयी जानकारियों का प्रयोग किया जा सके। इस टूलकिट का व्यक्तिगत और संगठन /संस्थानिक स्तर टीकाकरण के उपयोग को बढ़ाने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

इस टूलकिट में क्या है?

मार्गदर्शन: "टीकाकरण के समर्थक व प्रभावी व्यक्ति" के रूप में टीकाकरण गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए धार्मिक समुदायों को जोड़ने हेतु चरणबद्ध मार्गदर्शन।

धार्मिक आयाम: टीकाकरण के प्रति अविश्वास काम करने, व टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु धर्म आधारित सन्देश व उद्धरण ।

टीकाकरण पर परिचर्चा करना : टीकाकरण के प्रति व्यवहार परिवर्तन तथा बाधाओं को समझाना व टीकाकरण के लिए संवाद स्थापित करना ।

सोशल मीडिया पर सन्देश: सोशल मीडिया पर धर्म आधारित टीकाकरण के सन्देश देना।

सार-संक्षेप मार्गदर्शन: टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए अंतर-धार्मिक मंच बनाकर परिचर्चा करना; अंतर-धार्मिक सौहार्द्रपूर्ण मुहिम चलना तथा धार्मिक मान्यता वाले वैज्ञानिक-तकनिकी संगठनो को जोड़ना।

टूलकिट का उपयोग कैसे करें

- ☑ इस टूलकिट में दिए गये परामर्श /मार्गदर्शन वैश्विक समुदाय के लिए समाहित किये गए हैं ताकि उनको धार्मिक समुदायों को टीकाकरण को बढ़ावा देने से जोड़ने में सहायता हो सके।
- ☑ इस टूलकिट की शुरुआत "परिचय एवं टीकों की पृष्ठभूमि" करिये। फिर अनुक्रमणिका में दिए गए सम्बंधित सेक्शन /खंड को प्रयोग में ला सकते हैं।
- ☑ इस टूलकिट में दिए गए संदेशों तथा शब्दावलियों को अपनी स्थानीय भाषा तथा स्थानीय परिप्रेक्ष्य में ही प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि स्थानीय लोगों को ठीक प्रकार से समझ आ सके। स्थानीय व सम्बंधित आंकड़ों व तथ्यों को इस टूलकिट में समाहित किया जाना चाहिए ताकि जनजातीय / सांस्कृतिक / राष्ट्रीय परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में इसका प्रयोग किया जा सके। .
- ☑ वार्तालाप मार्गदर्शिकाएँ, धार्मिक सन्दर्भ, बैठकों के फॉर्मेट तथा सोशल मीडिया संदेशों का अलग से प्रिंट-आउट लेकर उनका आसानी से प्रयोग किया जा सकता है।

इस टूलकिट को प्रयोग करने के पश्चात्, कृपया इस QR कोड को स्कैन करके तीन प्रश्नो के सर्वेक्षण में भाग लेकर इस टूलकिट बनाने वालों को इसकी उपयोगिता व इसको और बेहतर बनाने के बारे में अपनी राय अवश्य दें।

SCAN ME

FEEDBACK SURVEY

टूलकिट के अपेक्षित उपयोगकर्ता

टीकाकरण को बढ़ावा देने जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों को जोड़ना काफी असरकारक होता है। एक अनुमान के अनुसार पांच में से चार व्यक्ति किसी न किसी प्रमुख धर्म से जुड़े होते हैं। अतः धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों एवं स्थानीय नेताओं के सहयोग से ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँच बनायी जा सकती है। लगभग सभी प्रमुख धर्मों में यह मान्यता है कि टीकाकरण से लोगों के, खासकर अत्यधिक जोखिमपूर्ण जीवन व्यतीत करने वालों के जीवन, स्वास्थ्य एवं रहन सहन को बेहतर बनाया जा सकता है।[13] यह टूलकिट धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों तथा उन लोगों यथा - स्वास्थ्य मंत्रालय, नीति -निर्माताओं, विधान निर्माताओं, कार्क्रम प्रबंधकों व तकनीकी स्टाफ, निजी क्षेत्र के स्टेकहोल्डर्स जो कि वैक्सीन के निर्माण, व प्रसार में संलग्न हैं, अन्तर-धार्मिक परिषदों, स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, चिकित्स्कीय एवं वैज्ञानिक संस्थानों, टीकाकरण पर व धार्मिक समुदायों के साथ कार्यरत समाज सेवी संस्थाओं, के लिए है जो टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु इनके साथ सहभागिता को मजबूत कर सकें। जब ये सभी लोग टीकाकरण के मध्यम से एक साझा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक साथ प्रयास करते हैं तो समुदाय में अपेक्षित बदलाव की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।

" मैं एक धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन के तौर पर अपने समुदाय में किस प्रकार से टीकाकरण के उपयोग को बढ़ावा दे सकता हूँ ? इसमें सहभागिता के क्या अवसर हैं ?

- धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन

" मैं किस प्रकार से टीकाकरण में आने वाली बाधाओं को दूर करने में धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन के साथ सहभागिता कर सकता हूँ ?

- सरकार, कार्यक्रम प्रबंधक, मीडिया से जुड़े लोग

धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों को जोड़ने का दृष्टिकोण व्यापक है - धार्मिक नेता अपनी विश्वसनीयता का उपयोग लोगों को टीकाकरण के प्रति जागरूक करने तथा टीकाकरण अपनाने हेतु प्रेरित करने में कर सकते हैं। सरकारें इन धार्मिक/ आस्थावान प्रभावीजनों के साथ सहभागिता कर उन्हें आवशयक संसाधन उपलब्ध कराकर टीकाकरण को बढ़ावा देने में सहयोग कर सकतीं हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत समाज सेवी संस्थाए तथा स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता टीकाकरण के प्रति समुदाय में व्याप्त धार्मिक आयामों पर अपनी समझ का प्रयोग करते हुए टीकाकरण को बढ़ाने में अपना योगदान दे सकते हैं। ये सभी स्टेकहोल्डर्स एक साथ मिल कर सामूहिक बदलाव ला सकते हैं।

धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन - टीकाकरण के पैरोकार तथा प्रभावीजन के तौर पर

धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन (ऐसे लोग जिन्हे धार्मिक समुदाय धार्मिक मामलों में एक अधिकृत व्यक्ति के रूप पर मानते हैं) "टीकाकरण के पैरोकार तथा प्रभावीजन के तौर पर" टीकाकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।.[14] धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन समुदाय में अपनी विश्वसनीयता, समुदाय के विषय में बारीक समझ, तथा समुदाय से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी पहुँच रखते हैं , अतः ऐसे लोगों को टीकाकरण के कार्यक्रम से जुड़कर लोगों को टीकाकरण अपनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रेरित कर सकते हैं । कई बार देखा गया है कि वरिष्ठ धार्मिक नेता , संप्रदाय प्रमुख, जनजातियों के नेता अपने समुदायों में अपना एक विशेष प्रभाव तथा स्तन रखते हैं , जिसके कारण ये लोग टीकाकरण के एक प्रभावी पैरोकार बन सकते हैं। शोध अध्ययन बताते हैं कि धार्मिक नेताओं जैसे विश्वसनीय लोगों के माध्यम से उनके समुदाय के लोगों को टीकाकरण के प्रति प्रेरित करना एक सर्वोत्तम तरीका है।[13,14] धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन, "टीकाकरण के पैरोकार तथा प्रभावीजन के तौर पर" टीकाकरण सम्बन्धी तमाम बाधाओं, भ्रांतियों, गलत धारणाओं, अविश्वास, सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक प्रतिमानों, को दूर कर टीकाकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही ये टीकाकरण की मांग व इसकी पहुँच को बढ़ाने, तथा टीकाकरण प्रदाताओं के साथ मिलकर वंचितों की पहचान भी कर सकते हैं। इनकी भूमिका और भी अधिक प्रभावी हो सकती है जब ये धार्मिक / आस्थावानजन समुदाय के उन लोगों के साथ

काम करते हुए उनके टीकाकरण के प्रति हिचकिचाहट / संकोच , विशेष सरोकारों, भ्रांतियों को दूर करने के प्रयास करते हैं तथा बार बार उन्हें इस बारे में जागरूक करते हैं।.[3,4,7,9,11] टीकाकरण के प्रति संकोच /हिचकिचाहट को दूर करने के लिए धार्मिक सभाओं में औपचारिक रूप से चर्चा करनी चाहिए तथा समुदाय के लोगों के साथ अन्य स्थानों यथा बाजार आदि में अनौपचारिक रूप से भी चर्चा की जानी चाहिए। धार्मिक नेता एवं वरिष्ठजन धार्मिक आयामों और संदेशों के माध्यम से लोगों को टीकाकरण के प्रति उत्साहित कर सकते हैं तथा स्वास्थ्य विभाग के साथ मिलकर काम करते हुए तथ्यपरक, आस्था विषयक संदेशों के माध्यम से लोगों के टीकाकरण के प्रति व्यवहार को बदल सकते हैं।.

चित्र -1 . टीकाकरण के पैरोकारों तथा प्रभावीजन के लक्ष्य [14]

टीकाकरण की पृष्ठभूमि

टीकाकरण क्या है तथा यह क्यों महत्वपूर्ण है?

टीकाकरण- जिसे प्रतिरक्षीकरण भी कहते हैं - इतिहास के सबसे सफल वैश्विक विकास में से एक है। **टीकाकरण बीमारियों से बचने तथा जीवन बचाने का एक सुरक्षित, प्रभावी तरीका है।**[20] टीकाकरण आपको खतरनाक बीमारियों के संपर्क में आने से पहले ही आपकी उन बीमारियों से रक्षा करता है/बचा लेता है । वर्तमान में काम से काम 25 बीमारियों से बचाने के लिए टीके उपलब्ध हैं जिससे प्रति वर्ष लाखों लोगों के जीवन को बचाया जा रहा है। पहले ऐसी बहुत सारी बीमारिया थीं जिनके कारण बड़ी संख्या में बच्चे व युवा मारे जाते थे या अपाहिज /विकलांग हो जाते थे, परन्तु टीकाकरण के कारण अब वे बीमारियां खतरा नहीं रह गयीं हैं। केवल बच्चों के टीकाकरण से ही प्रति वर्ष अनुमानतः कम से कम 40 से 50 लाख बच्चों के जीवन को बचा लिया जाता है।.[17]

टीकाकरण क्या है ?

"टीकाकरण से समुदाय में उन तमाम बीमारियों के अज्ञात कारणों को जानने का अवसर मिला है।"

"बीमारियां समुदाय में व्याप्त अनेक विवादों की वजह रहीं हैं(जैसे कि बुज़ुर्ग विधवाओं को डायन समझा जाता था और उन्हें पोलियो का कारक माना जाता था।) अब चूंकि पोलियो पूरे विश्व से लगभग समाप्त हो चुका है, इस तरह के विवाद भी ख़त्म होते जा रहे हैं। टीकों और चिकित्सा विज्ञान को इसका श्रेय जाता है।"

- सिएरा लियॉन के एक पारम्परिक चिकित्सक

चेचक के उन्मूलन की कहानी[20]

चेचक इतिहास की सबसे घातक बीमारियों में से एक थी जिसकी वजह से लगभग 3 करोड़ लोग मारे गए। परन्तु व्यापक वैश्विक टीकाकरण अभियान के कारण 1977 में चेचक का पूर्ण रूप से उन्मूलन हो गया, यह उन्मूलन की जाने वाली पहली बीमारी थी।

अधिकांश टीके सुई के माध्यम से बाँह या जांघ पर लगाए जाते हैं, यद्यपि कुछ टीके मुंह के द्वारा पिलाये भी जाते हैं या नाक में स्प्रे किये जाते हैं। टीके बच्चों व युवाओं को बीमारी विशेष से बचाते हैं अन्यथा उन बीमारियों की वज़ह से लोग घातक रूप से बीमार पड़ सकते हैं या उनकी जान भी जा सकती है।[20]

टीके किस प्रकार समुदाय और व्यक्तियों को बीमारियों से सुरक्षित रखते हैं?

टीके उन्हीं बीमारियों के छोटे, कमजोर या अक्रियाशील कीटाणुओं (वायरस या बैक्टीरिया) से बनाये जाते हैं , जो कि आपके शरीर को उस बीमारी से ग्रसित होने के खतरे के बिना ही शरीर को उस बीमारी से लड़ने हेतु सक्षम बनाते हैं। टीके आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को उस बीमारी के प्रति मज़बूत बनाते हैं तथा उसे इस बीमारी को लम्बे समय तक या आजीवन मुकाबला करने हेतु सक्षम बनाते हैं। इलाज की बजाय टीके आपके शरीर को उस बीमारी से ग्रसित होने से ही बचा लेते हैं।[20]

चित्र -2 : टीके किस प्रकार आपके शरीर के प्राकृतिक प्रतिरक्षण तंत्र के माध्यम से उस बीमारी से ग्रसित होने के खतरे को कम कर देते हैं [21]

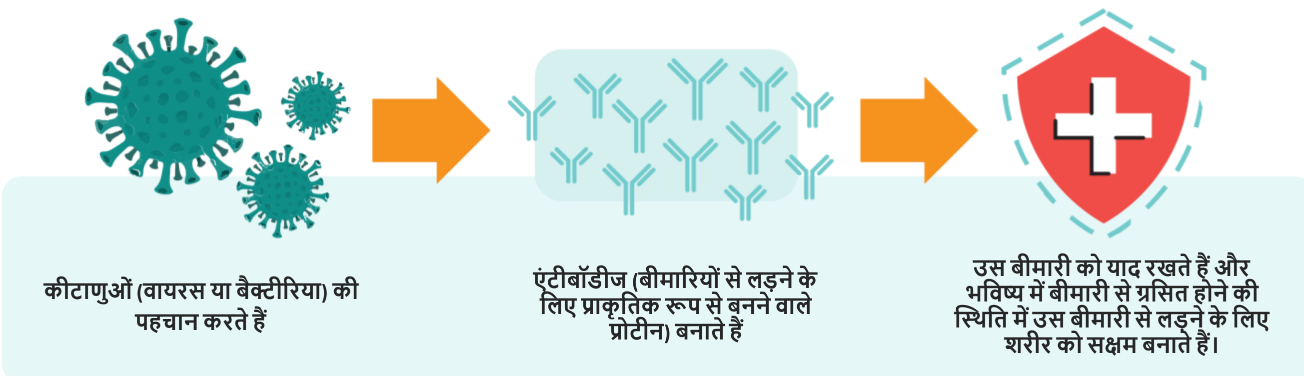

इसका तात्पर्य यह है कि टीके आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत कर उसे सक्षम बनाकर बीमारियों से ग्रसित हुए बिना ही शरीर की बीमारियों से रक्षा करते हैं। प्रत्येक टीके किसी ना किसी ख़ास / विशेष बीमारी से एक निश्चित अवधि के लिए रक्षा करते हैं। कुछ टीके किसी बीमारी से पूर्ण रूप से रक्षा करने के लिए एक से अधिक बार लगाए जाते हैं। "बूस्टर' टीके प्रारंभिक टीकों के कुछ समय के बाद लगाए जाते हैं ताकि शरीर को यह याद रहे कि भविष्य में उस बीमारी से कैसे लड़ा जाये। अतः यह महत्वपूर्ण है कि स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता से यह पुख्ता जानकारी कर ली जाये कि नवजात से लेकर युवावस्था तक कौन-कौन से टीके कब और कितनी बार लगने आवश्यक हैं।[10,17,20] आस्थावान लोग दो महत्वपूर्ण कारणों से टीकाकरण के लिए प्रेरित होते हैं - स्वयं को बीमारियों से बचाने के लिए एवं अपने आसपास के लोगों को बीमारियों से बचाने के लिए। बहुत सारे धार्मिक समुदाय स्वयं को तथा अपने आसपास के जोखिम पूर्ण लोगों को बीमारियों से बचा कर अपने धर्म /आस्था पर गर्व करते हैं तथा लोगों से प्रेम करते हैं। ऐसे लोग बहुत ही कम संख्या में हैं जो टीकाकरण का विरोध करते हैं या उसके प्रति उदासीन हैं तथा उन लोगों पर निर्भर हैं जो उनके भले के लिए उनका सम्पूर्ण टीकाकरण करवाते हैं। ऐसे अच्छे समुदाय सभी के लिए भले /कल्याण के लिए अपनी एक प्रेममयी व धार्मिक जिम्मेदारी समझते हैं।[13] किसी भी समुदाय में जब अधिकांश लोगों को किसी बीमारी से बचाने के लिए टीके लग जाते हैं तो ही सभी लोगों का उस बीमारी से बचाव होता है। [10]

टीके कैसे बनाये जाते हैं , परखे /जांचे जाते हैं तथा यह सुनिश्चित किया जाता है कि ये पूर्णतया सुरक्षित हैं?

टीके सुरक्षित व प्रभावी होते टीकों के कारन लोग बीमार नहीं होते। टीका लगने के बाद कुछ लोग मामूली और अस्थायी दुष्प्रभाव यथा सरदर्द या हल्का बुखार महसूस करते हैं। इस मामूली दुष्प्रभाव का अर्थ यह है कि उक्त टीका आपके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की दिशा में सही कार्य कर रहा है। टीकों के गंभीर दुष्प्रभाव बहुत यदा-कदा ही देखने को मिलते हैं।.[17,20,21,22] अलग अलग व्यक्तियों का शरीर टीकों को अलग तरह से प्रतिक्रिया देता है। यह टूलकिट एक विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाता का विकल्प नहीं है जो कि टीकों की सुरक्षा, प्रभाव तथा दुष्प्रभाव के बारे में विस्तृत जानकारी रखते हैं।

कोविड -19 महामारी [21]

कोविड -19 (कोरोना वायरस) एक नयी बीमारी थी जिसे वैश्विक महामारी घोषित किया गया। शुरुआत में इसका कोई टीका उपलब्ध नहीं था और इस वायरस के तेजी से पूरे विश्व में फैलने से लाखों लोग मारे गए। सौभाग्यवश, चूंकि इसी प्रकार के वायरस का टीका पहले से ही मौजूद था, एक वर्ष के भीतर ही कोविड -19 से बचाव का टीका विकसित कर लिया गया।

सामान्यतः सभी को टीकों के सुरक्षित होने संबधी चिंताएं /सरोकार होती हैं। लोगों को टीकों के सुरक्षित होने सम्बन्धी जानकारी सरल व तथ्यपरक भाषा में लगातार देने से लोग टीकों के सुरक्षित होने के बारे में समझ जाते हैं और टीकाकरण के प्रति सहज महसूस करते हैं। प्रयोग में लाने से पूर्व प्रत्येक टीकों को एक विस्तृत जाँच की प्रक्रिया से गुजारा जाता है, जिससे टीकों के सुरक्षित होने को सुनिश्चित किया जा सके। टीके सभी समूहों यथा गर्भवती महिलाएं, तथा विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों वाले समूहों के लिए सुरक्षित हैं या नहीं, इसका विशेष रूप से मूल्यांकन (जांच परख) किया जाता है। वैज्ञानिक टीकों के सभी घटकों तथा सभी संभावित खतरों का बारीकी से मूल्यांकन करते हैं। नए विकसित टीकों को बीमारी से बचाव, सुरक्षा और प्रभाविकता के लिए पहले जानवरों पर परखा जाता है।[21] तत्पश्चात टीके को सावधानीपूर्वक विभिन्न क्लीनिकल ट्रायल के माध्यम से इंसानों पर प्रयोग कर परखा जाता है तब जाकर इसका व्यापक उपयोग किया जाता है। प्राधिकृत वैज्ञानिक संस्थाए टीकों के सुरक्षित होने को सर्वोच्च प्राथमिकता देती हैं तथा ये इस विषय पर कभी भी समझौता नहीं करते। यहां तक कि कोविड -19 जैसी महामारी के टीकों को भी उसी कठिन व विस्तृत जाँच व मूल्यांकन से परखा गया ताकि ये टीके सभी के लिए सुरक्षित व प्रभावी सिद्ध हों। सौभाग्यवश, अब नए टीकों को जल्दी विकसित कर लिया जाता है क्योंकि इस प्रकार के वायरस के टीके पहले से ही मौजूद हैं। [17,20,21]

टीकों से सम्बंधित जानकारी के विश्वसनीय स्रोत

WORLD HEALTH ORGANIZATION—VACCINES AND IMMUNIZATION

Vaccine Fact Sheets

Vaccine Myths and Misconceptions

How Do Vaccines Work?

How are Vaccines Developed?

Manufacturing, Safety, and Quality Control of Vaccines

स्थानीय परिप्रेक्ष्य में टीकाकरण की जानकारी के लिए **World Health Organization Immunization Dashboard**, देखें जहाँ आप क्षेत्रीय व अपने देश के आंकड़े देख सकते हैं। ये आंकड़े वैक्सीन द्वारा बचाव की जाने वाली बीमारियों तथा टीकाकृत लाभार्थियों के समयबद्ध रिपोर्टेड आंकड़े को दर्शाते हैं।

भ्रामक जानकारियां - गलत व अपूर्ण जानकारियां - तथा जानबूझकर फैलाई गयीं गलत सूचनाएं बड़ी तेजी से फैलती हैं जिन्हे रोका जाना अत्यावश्यक है। ऐसा देखा गया है कि पारम्परिक चिकित्सकों के इलाज पर लोग भरोसा करते हैं। पारम्परिक चिकित्सकों की महत्वपूर्ण भूमिका को सराहा जाना चाहिए तथा उन्हें टीकाकरण को बढ़ावा देने में भी जोड़ना चाहिए। साथ ही टीकाकरण से सम्बंधित समुदाय में व्याप्त पारम्परिक विश्वास व प्रथाओं को विश्वसनीय, तथ्यपरक जानकारियों के साथ के साथ तुलना करने में इन पारम्परिक चकित्सकों का सहयोग भी लिया जाना चाहिए। टीकाकरण से सम्बंधित विश्वसनीय स्रोतों जैसे - विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वास्थ्य मंत्रालय आदि द्वारा दी गयी सलाह, तथा मार्गदर्शन का भी पालन किया जाना चाहिए।. हमें इन विश्वसनीय स्रोतों द्वारा प्राप्त सूचनाओं / जानकारियों पर भरोसा करना चाहिए बजाय अपुष्ट स्रोतों द्वारा फैलायी जा रही गलत जानकारियों के। जब आप टीकाकरण से सम्बंधित गलत और भ्रामक जानकारियों पर चर्चा करें तो उन जानकारियों के स्रोतों तथा उनकी विश्वसनीयता के बारे में अवश्य पूछें। उन जानकारियों की पुष्टि या खंडन के लिए सदैव विश्वसनीय स्रोतों का सन्दर्भ दें।.

टीकों से सम्बंधित हिचकिचाहट या संकोच क्या है ??

टीकाकरण पर विश्वास एवं उसकी स्वीकार्यता के विभिन्न पहलुओं/ स्पेक्ट्रम में उसके विरोध से लेकर शंका, अनिच्छा, हिचकिचाहट /संकोच एवं इसके सम्पूर्ण समर्थन तक सभी पहलू समाहित हैं। इन पहलुओं पर सारणी -2 (टेबल -2) में वैक्सीन विश्वास माइंडसेट/मानसिकता पर विस्तार से चर्चा की गयी है, जिसमे दर्शाया गया है कि 'मध्यम' या 'संयत /नरम' माइंडसेट /मानसिकता वाले अक्सर अपने आपको बदलने के लिए तैयार रहते हैं। टीकों से सम्बंधित संकोच या हिचकिचाहट का अर्थ है - टीके की उपलब्धता के बावजूद भी टीके को अपनाने में विलम्ब करना या पूर्णतः अस्वीकार करना —[20,21] जो कि मध्यम स्पेक्ट्रम /पहलू के अंतर्गत आता है। टीकाकरण के प्रति संकोच या हिचकिचाहट के कई कारण होते हैं। टीके लगवाने से पहले, लोगों का यह अधिकार है कि टीकाकरण से सम्बंधित उनकी शंकाओं, प्रश्नों और चिंताओं का उचित और प्रभावी समाधान किया जाये ताकि वे अपने व अपने परिवार के लिए टीकाकरण सम्बन्धी सर्वोत्तम निर्णय ले सकें। लोगों के टीकाकरण संबधी शंकाओं व चिंताओं का उद्देश्यपरक तथा प्रभावी समाधान करने के लिए बिना जल्दीबाज़ी किये अपनी समझ बनाना महत्वपूर्ण है। समुदाय में लोग प्रायः पारम्परिक चिकित्सकों व धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों से अपने स्वास्थ्य सम्बन्धी समाधान और मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन लोगों में टीकाकरण के प्रति फैले अविश्वास तथा गलत धारणाओं को दूर करने में धार्मिक आयाम सम्बन्धी महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रदान कर सकते हैं।

टीकाकरण सम्बन्धी धार्मिक आयाम

सभी धर्मों के परिप्रेक्ष्य में टीकाकरण सम्बन्धी सामान्य शंकाओं का निवारण

सभी धर्मों के अनुयाइयों द्वारा टीकाकरण सम्बन्धी विभिन्न शंकाओं को प्रकट किया गया है, जिसका समाधान वस्तुपरक, धर्म आधारित जानकारी युक्त संवाद करके ही किया जा सकता है। आप अपने आपको इन जानकारियों से सुसज्जित करके तथा समुदाय की सामान्य शंकाओं को समझकर एक धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन के तौर पर लोगों के साथ परिचर्चा कर , उन्हें जागरूक व शिक्षित कर टीकाकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। लोगों को यह समझाना आवश्यक है कि टीकाकरण उनके पारपंरिक जीवन शैली व धार्मिक आस्था के विरुद्ध ना होकर उसी का एक भाग है। आप अपने साथियों के साथ रोल-प्ले के माध्यम से टीकाकरण पर अपने तर्कों व विचारों को सुदृढ़ कर सकते हैं।

क्या आप जानते हैं?

धार्मिक नेता टीकाकरण को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तंज़ानिया देश के धार्मिक नेताओं की कोरोना वायरस के टीकाकरण के प्रसार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में जानने के लिए यहाँ क्लिक करें -here.

तालिका -1 : टीकाकरण सम्बन्धी सामान्य अंतर्धार्मिक आपत्तियां तथा उनके समाधान [8]

टीकाकरण सम्बन्धी सामान्य अंतर्धार्मिक आपत्तियां	संभावित समाधान
मनुष्यों / इंसानों को प्रभु की इच्छा के विरुद्ध मानव निर्मित समाधान नहीं देने चाहिए। प्रकृति को उसका काम करने देना चाहिए।	प्रभु ने इंसानों को सीखने, सोचने और निर्माण करने के लिए बनाया है। प्रभु इंसानों के ही माध्यम से लोगों की शारीरिक आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा उन्हें अनावश्यक कष्टों और अकारण मृत्यु से बचता है।
हमें प्रभु की प्रार्थना के शक्ति में और पारम्परिक चिकित्सा में विश्वास रखना चाहिए ना कि विज्ञान द्वारा प्रदत्त जैव-चिकित्स्कीय समाधानों में।	हमारी आस्था प्रभु की शक्ति में हों चाहिए और हमारा विश्वास उन व्यक्तियों में होना चाहिए जिन्हें प्रभु ने लोगों को ठीक करने की बुद्धि दी है। अपने शरीर को कष्टों और बीमारियों से बचाना भी प्रभु के प्रति आस्था एवं उनके बताये गए रास्ते पर चलना है। प्रभु ही हमें बीमारियों से ठीक करते हैं, और उनके हमें ठीक करने का माध्यम आधुनिक चिकित्सा पद्धति भी हो सकती है।
हमारा शरीर एक मंदिर की तरह है और प्रभु की देन है। हमें अपने शरीर में उन वर्जित तत्वों यथा - वायरस, बैक्टीरिया, को प्रवेश नहीं देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर - ▪ गर्भपात के भ्रूण से प्राप्त ऊतक /टिश्यू का प्रयोग टीके बनाने में होता है। चूंकि गर्भपात एक प्रकार से जीव /मानव हत्या है, अतः नैतिक रूप से हमें इस पापकर्म से दूर रहना चाहिए। ▪ टीके लगवाना हिन्दू धर्म के खान-पान के नियमों के विरुद्ध है (जैसे- टीकों में सूअर या गाय के अंश का दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है)	बाहरी तत्वों के बजाय टीके आपके ही शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को प्राकृतिक रूप से मज़बूत बनाकर आपको बीमारियों से बचाते हैं। टीके छोटे और कमज़ोर विषाणुओं / वायरस या जीवाणुओं/ बैक्टीरिया के अक्रियाशील स्वरुप से बनाये जाते हैं ताकि आपका शरीर जीवित विषाणुओं / वायरस या जीवाणुओं/ बैक्टीरिया से आपके शरीर को बचाने में सक्षम हो सके। हिन्दू, इस्लाम एवं ईसाई धर्मों में टीकाकरण को निषेध नहीं किया गया है। लगभग सभी धर्मों के बड़े धार्मिक गुरुओं ने ये जोर देकर कहा है टीकाकरण करवाना धर्म या धार्मिक संस्थाओं के विरुद्ध नहीं है। टीकाकरण से होने वाले फायदे किसी भी अन्य नुक्सान से कहीं अधिक हैं ।
पश्चिमी सभ्यताएं और संस्कृतियां हमसे अलग हैं और वो एक एजेंडे के ये काम कर रहे हैं। हम उन टीकों पर विश्वास नहीं कर सकते जो संभवतः हमारे शरीर को या तो नपुंसक बना सकते हैं या हमारे अंदर को चिप डाल सकते हैं , ताकि हमारी सभी गतिविधियों की जानकारी उनको मिल सके।	टीके पूरी दुनिया के लिए बनाये जाते हैं और क्षेत्रों और जनसंख्याओं के आधार पर इनमें भेद नहीं किया जाता। सभी टीके जाँच और सुरक्षा की जटिल प्रक्रिया से गुजारे जाते हैं ताकि इनका कोई भी नुकसानदायक प्रभाव ना रहे। किसी भी टीके में कोई चिप या उपकरण डालना सम्भव ही नहीं है।

ईसाई धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [1,6,8,13,16,17,18]

बीमारियों और पीड़ा को प्रभु ने सृष्टि के लिए कभी नहीं बनाया। विषाणु जनित बीमारियों ने पूरे विश्व में, और खासकर गरीबों और जोखिम पूर्ण स्थिति में रहने वालों में अपार कष्ट, पीड़ा और मृत्यु दी है। ईसाई मतावलम्बी टीके के विकास पर ख़ुशी मना सकते हैं टीके का अविष्कार उन महानतम उपलब्धियों में से एक है जिससे लाखों लोगों का मृत्यु और पीड़ा से बचाया जा सका।.

कुछ लोग ये विश्ववास करते हैं कि प्रभु के प्रति उनकी आस्था और समर्पण ही उन्हें बीमारियों और आपदाओं से बचाएगा। परन्तु ये पवित्र बाइबिल के उपदेशों के विपरीत है। ओल्ड टेस्टामेंट के अनुसार बीमारियों के प्रति जानकारी हमें बीमार पड़ने से बचाती है तथा बीमारियों के प्रति अज्ञानता हमें मुसीबत की ओर ले जाती है।

- **"मेरे लोग जानकारी की कमी से बर्बाद हो गए।." (Hosea 4:6)**
- **"समझदार/विवेकशील लोग खतरे को भांप कर अपने आप को बचाते हैं परन्तु भोले लोग आगे बढ़ते जाते हैं और दंड भुगतते हैं।" (Proverbs 27:12)**

पवित्र बाइबिल ईसाईयों को प्रभु द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद दूसरों की भलाई में लगाने के लिए प्रेरित करती है। जीवन रक्षक आधुनिक दवाओं का विकास प्रभु द्वारा प्रदत्त एक ऐसा ही आशीर्वाद है जो प्रभु ने हमें अपनी कृपा स्वरुप दूसरों की पीड़ा और मृत्यु को काम करने के लिए दिया है। अंततः सभी उपचार प्रभु ही प्रदान करता है। प्रभु हम इंसानो के माध्यम से ही अपनी असीम कृपा और दया हम तक पहुंचाता है।

प्रभु यीशु अच्छी तरह से जानते थे कि उनके अनुयायी **"संसार के लिए प्रकाश** "कहे जायेंगे **(मैथ्यू 5:14)** और वे कहते थे कि अपने पड़ौसी से भी उतना ही प्रेम करो जितना तुम खुद /स्वयं से करते हो **(मार्क 12:31)**। अपने स्वयं के और अपने परिवार के टीकाकरण कराने से हम अपने आस पास के उन लोगों से प्रेम करते हैं जो कि उन बीमारियों के कारण जोखिम की स्थिति में हों या टीका लगवाने में सक्षम ना हों। **अपनी स्वार्थी महत्वाकांक्षा या व्यर्थ के दम्भ के अधीन होकर कुछ भी ना करें, बल्कि मानवता को अपने से ज्यादा महत्व दें, अपने स्वार्थ में ना पढ़कर सभी के भलाई के लिए काम करें।" (Philippians 2:3-4).**

हमारे प्रभु ने जीसस के माध्यम से **"राज्य के अच्छे समाचारों की घोषणा करने और लोगों की सभी पीड़ा व बीमारियों के उपचार करने"** को अपनाने के लिए कहा है **(मैथ्यू 4 :23)**। लोगों को पीड़ा, बीमारियों एवं मृत्यु से बचाने के लिए तथा वृहत्त सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए टीके सबसे सुरक्षित तथा प्रभावी मार्ग है।

इस्लाम धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [2,8,13]

मानव जीवन को बचाना और संजोये रखना इस्लामिक कानून के उच्चतम मूल्यों में से एक है। प्रत्येक मानव का जीवन अल्लाह की अनमोल रचना है। घातक बीमारियों के बोझ को काम करने हेतु किये गए टीकों का विकास सीधे तौर पर लोगों की पीड़ाओं को कम करने के महान उद्देश्यों से हमेशा से ही जुड़ा रहा है।

आधुनिक चिकित्सा एवं उपचार के लिए किये गए वैज्ञानिक प्रयासों में योगदान का मुसलमानों का एक सुदृढ़ इतिहास रहा है। इस्लाम में इब्न सीना को आधुनिक चिकित्सा, उससे सम्बद्ध इस्लामिक संस्कृति एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिक विकास का जनक माना जाता है।

बहुत सारे इमामों तथा इस्लामिक नेताओं ने ये वक्तव्य /फतवे ज़ारी किये हैं कि टीकाकरण इस्लामिक सिद्धांतों के अनुरूप है। ऑर्गेनिज़शन ऑफ़ इस्लामिक कांफ्रेंस तथा इंटरनेशनल फ़िक़्ह काउंसिल के 15 वें वार्षिक अधिवेशन में ये निर्णय पारित किया गया कि इस्लाम में टीकाकरण स्वीकार्य है।

पैगम्बर साहब, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथी अबू दरडा के हवाले से अल्लाह के रसूल ने कहा है - **"वस्तुतः अल्लाह ने ही बीमारी और उनके इलाज को बनाया है, और हर एक बीमारी के लिए उसने इलाज बनाया है। बीमारियों का इलाज कराएं पर गलत तरीकों से नहीं " [सुन्नान अबी दाउद 3874].**

हालाँकि कुछ मुस्लिमों को मानना है कि टीके हलाल नहीं हो सकते, जबकि इस्लामिक आर्गेनाईजेशन फॉर मेडिकल साइंसेज ने कुछ टीकों में प्रयुक्त सूअर जनित जेलेटिन /चर्बी को इस्लाम के अनुरूप माना है।

- **1995 में इस्लामिक आर्गेनाईजेशन फॉर मेडिकल साइंसेज द्वारा लिए गए एक निर्णय के अनुसार - "जेलेटिन/चर्बी को जानवरों की हड्डियों, त्वचा और नसों के एक विशेष परिष्करण प्रक्रिया के तहत बनाया जाता जो कि इस्लाम में स्वीकार्य है।"**

यदि आपने टीके लगवा लिए हैं तो आप अन्य लोगों को बीमारी के खतरे से बचाने में मदद करते हो अतः इस नेक काम के लिए अल्लाह आपके नियामतें देता है। **पवित्र क़ुरान में एक आयत है [5:32] कि "यदि कोई किसी की जान बचाता है तो इसका अर्थ है कि वह पूरे मानवता /इंसानियत की जान बचाता है।"** टीके लगवा लेने से हम अल्लाह के प्रति उसके द्वारा दिये गये इलाज के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करते है। लोगों की जान बचाना एक तरह से अल्लाह की उपासना करना ही माना जाता है।

खुदा उन्हीं को नियामतें देता है जो उसको पूरी सकारात्मकता से संभल कर रखते हैं। **"और हम निश्चित रूप से तुम्हारे डर, भूख, धन, जीवन, या फलों की हानि से तुम्हारा इम्तिहान लेंगे पर तुम्हे धैर्य पूर्वक उन नियामतों को संभाले रहने पर हम प्रसन्न होंगे" पवित्र क़ुरान [2:155].**

मुसलमानों को बीमारी से बचने के लिए सभी संभव सावधानियां अपनानी चाहिए। **"प्लेग जैसी बीमारियों से उसी तरह दूर भागो, जैसे तुम शेर देख कर दूर भागते हो" - बुखारी 5707 और अहमद 9722.**

हमें खुद का बचाव करना और अपने आस पास के लोगों का बचाव करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जैसा की **पैगम्बर मुहम्मद साहब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम** ने कहा है , **"हमारा शरीर एक है, और यदि हमारे शरीर के किसी भी भाग में दर्द होगा तो हमारा पूरा शरीर बुखार से तड़पेगा" [साहिह अल बुखारी 6011 , साहिह मुस्लिम 2586]** तथा **"लोगों का मुझमे तब तक पूर्ण आस्था नहीं हो सकती जब तक कि उनमें दूसरों के प्रति उतना ही प्रेम ना हो जितना वो खुद से करते हैं "।** विश्व के सभी मुसलमानों को अपने परिवार, पड़ौसी, दोस्त और समुदाय की जान बचाने के लिए सबसे आगे और तत्पर रहना चाहिए।

हिन्दू धर्म से सम्बंधित विशिष्ट सन्देश [8,12,13]

"लोकः समस्तः सुखिनो भवन्तु" । हिन्दुओं की सर्वव्यापी प्रार्थना - **"सभी जीव जंतुओं का कल्याण हो, सब प्रसन्न रहें, मुक्त रहें, मैं अपने मन, वचन और कर्म से लोगों की प्रसन्नता और मुक्ति में अपना योगदान दे पाऊं"।** इस प्रार्थना के माध्यम से हिन्दू जीवन रक्षक टीकों को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित होते हैं।

पूरी मानवता का कल्याण ही हिन्दू धर्म का मूल लक्ष्य है। हिन्दू पूरी मानवता के लिए अपार प्रेम और सरोकार रखते हैं तथा पीड़ा के निवारण के लिए लक्षित होते हैं। हिन्दुओं के पौराणिक धार्मिक ग्रन्थ **भागवद गीता** हमें याद दिलाते हैं - **...... "समझदार, बिना स्वार्थ के पूरे विश्व की भलाई के लिए कार्य करते हैं.... तथा वे करुणा भाव से सभी कार्य भली प्रकार से निष्पादित करते हैं।"**

टीकाकरण हिन्दुओं की जीवनशैली से लम्बे समय से जुड़ा हुआ है। **आयुर्वेद - "जीवन का विज्ञान**", हिन्दुओं की एक पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली, हिन्दुओं के पवित्र धार्मिक ग्रन्थ **अथर्ववेद** का ही एक भाग है। टीकाकरण का सबसे प्रचीन उल्लेख **आयुर्वेद के भगवान्** कहे जाने वाले **धन्वन्तरी जी** के माध्यम से *हरिवंश पुराण* में मिलता है। जैसा कि प्रसिद्ध रोग निदानकर्ता (पैथोलोजिस्ट) व जैवनैतिकता विशेषज्ञ डॉ श्रीदेवी सीतारमण ने कहा है - हिन्दू समुदाय चिकित्सकीय पेशे को सेवा करने और पीड़ा दूर करने के कारण प्राचीन समय से ही एक सम्मानित पेशा मानता रहा यह स्पष्ट है कि धर्म और विज्ञान के लक्ष्य समान हैं - "पीड़ाओं को कम कर मानवता को खुशहाल बनाना"। आयुर्वेदाचार्य महर्षि चरक ने सहस्त्राब्दियों पूर्व कहा था कि चिकित्सा विज्ञान का एक ही उद्देश्य होना चाहिए - ***"सर्व भूता दया"*** अर्थात सभी जीवों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव रखना।" भागवद गीता (4 :38) में कहा है कि मनुष्य को पवित्र /निर्मल करने का सबसे बड़ा

माध्यम सही ज्ञान का होना है।[14] एक आस्थावान हिन्दू होने नाते हमारे व्यवहार /कर्म विशेषज्ञों द्वारा प्रदत्त सत्य ज्ञान से प्रेरित होने चाहिए। टीकाकरण के सन्दर्भ में चिकित्सा विज्ञान ही शुद्ध ज्ञान का एक सबसे विश्वसनीय स्रोत है जो कि मानव जीवन को बचाने हेतु हमें सही मार्ग दिखलाता है।

- **ये भौतिक संसार पूरी तरह से दूषित है तथा जो प्रभु का प्रसाद ग्रहण करते हैं वो रक्षित होते हो, जबकि जो प्रभु विष्णु का प्रसाद ग्रहण नहीं करते वो जोखिम में होते हैं। [भागवत गीता 3 . 14]**

हिन्दू धर्म में वैक्सीन के प्रति कोई निषेध /प्रतिकार नहीं है। यद्यपि हिन्दू गाय को पूजते हैं, गाय के शरीर से बनाने वाले कुछ टीकों को कहीं भी धार्मिक रूप से प्रतिबंधित नहीं माना गया है। बहुत सारे हिन्दू धर्मगुरुओं ने वैश्विक कल्याण तथा लोगों के स्वास्थ्य के लिए टीकाकरण को पूर्ण रूप से स्वीकार्यता दी है। हिन्दू धर्म में टीकाकरण के माध्यम से मनुष्यों की बीमारियों से रक्षा पूरी तरह से स्वीकार्य है।

टीकाकरण पर चर्चा के लिए मार्गदर्शन

टीकाकरण को बढ़ावा देने के प्रमुख कारक

टीकाकरण पर प्रभावी चर्चा करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सामाजिक और व्यवहारगत कारकों को अच्छी तरह से समझा जाये। लोग क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, सामाजिक मानदंड व सामाजिक दबाव क्या हैं, व्यक्तिगत प्रेरणा किस प्रकार की है, तथा व्यवहारिकता और उपलब्धता आदि के सम्मिश्रण से लोगों का व्यवहार प्रभावित होता है। चित्र 3 में दिए गए निम्न फ्रेमवर्क[3] टीकाकरण के लिए हिचकिचाहट /संकोच के प्रति आस्था समूहों के विचारों और सरोकारों /चिंताओं को सुनने व जानने तथा उस अनुरूप सहयोग करने के लिए एक आधार प्रदान करता है। धर्मगुरु या धार्मिक नेता टीकाकरण के प्रति लोगों में हिचकिचाहट /संकोच को दूर करने में अपना योगदान दे सकते हैं (जैसे - किसी प्रभावी और विश्वसनीय धार्मिक गुरु /नेता द्वारा लोगों को टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित करना या धार्मिक स्थल पर टीकाकरण आयोजित करने के लिए सहयोग देना)।.

चित्र 3 : टीकाकरण फ्रेमवर्क के व्यवहारगत व सामाजिक कारक[3]

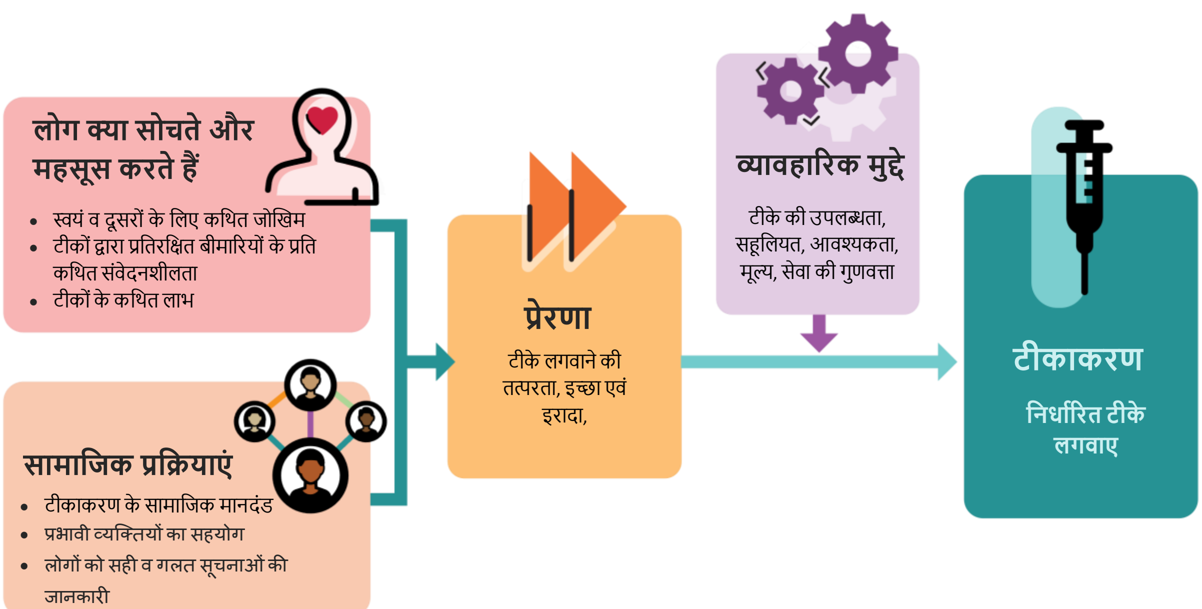

वैक्सीन पर विश्वास की मानसिकता /माइंडसेट

विभिन्न शोध से पता चलता है कि टीकाकरण के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रकार की व्यवहारिक "मनोदशाएं" /मिंडसेट्स हैं।[11] . यदि यह ज्ञात हो कि टीकाकरण के परिप्रेक्ष्य में लोगों (व्यक्तिगत या समूह) की किस प्रकार की मनोदशा है, तो धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन उस अनुरूप अपने सन्देश प्रभावी रूप से ऐसे लोगों तक पहुंचा कर उनकी मनोदशा को टीकाकरण के पक्ष में करने में सफल हो सकेंगे। लोगों को उनकी मनोदशाओं के परिप्रेक्ष्य में उन्हें किसी श्रेणी या वर्ग में बाँटने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उनकी इन मनोदशाओं के प्रकार और उनके समाधान के सम्बंधित तरीकों को जानने से आप और अधिक प्रभावी तरीके से लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित कर पाएंगे। संदेशों को बार बार और लगातार साझा करते रहें ।.

तालिका 2 . वैक्सीन पर विश्वास की मानसिकता / माइंडसेट[11]

"मैं स्वयं और अपने बच्चों के टीकाकरण के लिए उत्सुक हूँ। टीकाकरण कहाँ हो रहा है और कौन कौन से टीके लगेंगे मुझे इन जानकारी के लिए मदद चाहिए।"

"मैं टीकों से होने वाले लाभ पर अध्ययन कर रहा हूँ। मुझे टीकाकरण पर निर्णय लेने किये कुछ और जानकारी चाहिए।"

टीकों के समर्थक / पैरोकार	जिन्हें टीके लगवाने में झिझक हो
• टीकाकरण करवा लिया या टीकाकरण के लिए पूरी तरह से तैयार। • टीकाकरण से होने वाले लाभ अत्यधिक महत्व देते हैं और सभी के टीकाकरण के लिए इच्छुक रहते हैं।	• टीकाकरण का विरोध नहीं करते पर टीकाकरण के बारे में इनके गंभीर सवाल रहते हैं।
अनुशंषा • ऐसे व्यक्तियों का प्रेरक के रूप में लाभ उठायें और उन्हें टीकाकरण सम्बन्धी उनकी कहानियों को अपने आस्था समुदाय में साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।	**अनुशंषा** • भ्रांतियों पर चर्चा ना करके उनके भय को दूर करने का प्रयास करें। • टीकाकरण के बारे में धार्मिक संदशों के साथ टीकों के सुरक्षित होने व बीमारियों से प्रभावी रूप से बचाव करने पर ज्यादा चर्चा करें।

"मैं अपने बच्चों को सामान्य बीमारियों से बचाना चाहता हूँ, पर मुझे नहीं मालूम कि ये टीके सुरक्षित हैं और मुझे उनके दुष्प्रभाव से डर लगता है।"

"टीके जिन बीमारियों से बचाव के लिए लगवाए जाते हैं, उनसे किसी को कोई नुकसान नहीं होता है। मुझे नहीं लगता कि मुझे उन बीमारियों से कोई खतरा है, पर अगर मेरे टीका लगवाने से लोग बीमारियों से बच सकते हैं तो मुझे टीके लगवाने में कोई आपत्ति नहीं हैं। ।"

चिंतित समर्थक / पैरोकार	उदासीन व्यक्ति
• समुदाय में सभी के टीकाकरण की आवश्यकता को समझते हैं पर व्यक्तिगत जोखिम और सुरक्षा के बारे में चिंतित हैं। • बुज़ुर्गों और अन्य जोखिम समूहों के कारण टीकाकरण पर विचार कर सकते हैं ।	• अपेक्षाकृत स्वस्थ्य अक्सर युवा व्यक्ति जो खुद टीकाकरण के प्रेरित नहीं होते पर सामाजिक स्वीकृति के कारण प्रेरित होते हैं। • व्यक्तिगत रूप से टीकाकरण करवाना व्यर्थ लगता है, पर दूसरों को आपत्ति ना हो इसलिए टीकाकरण करवा लेते हैं।
अनुशंषा • इन्हें टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जा सकता है बशर्ते कि इन्हे प्रभावी ढंग से समझाया जाये कि टीके सुरक्षित हैं। • विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा प्रदाता या धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के माध्यम से इनका डर दूर किया जा सकता है।	**अनुशंषा** • टीकाकरण की सुविधा और टीकाकरण के सामाजिक / जीवनशैली से सम्बंधित लाभ पर जोर दें। • टीके के प्रति दुराव को दूर करने के लिए कई बार बतलायें व संपर्क करें।

“मैंने बहुत से सोशल मीडिया पोस्ट देखीं हैं जिसमे बताया गया है कि टीके से भविष्य में नुकसान हो सकता है। मैं एक स्वस्थ व्यक्ति हूँ , अतः मैं अभी टीका नहीं लगवाउँगा और इंतज़ार करूँगा कि टीके के और भी सुरक्षा सम्बन्धी परीक्षण हो जाएँ।”

“Covid -19 एक मिथ्या है / झूठ है । ये महामारी पश्चिमी सरकारों द्वारा बनायी गयी है, जो मुझे नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है।”

चिंतित संशयवादी	पक्के विरोधी **
• टीकों के बारे में बहुत कुछ पता नहीं होता पर टीकों के परीक्षण और सुरक्षा पर संदेह करते हैं। • जब तक टीकों की सुरक्षा, जोखिम व लाभ के बारे में जानने में समय लगता है, तब तक अपने जीवनशैली में सुधार करने को इच्छुक रहते हैं।	• टीके के सख्त खिलाफ होते हैं और टीकाकरण के लिए जरा भी इच्छुक नहीं होते। • बीमारियों के खतरे से निपटने के लिए खुद की योग्यता /क़ाबलियत पर ही भरोसा करते हैं तथा /या टीकाकरण की खिलाफत इनके मन में गहराई तक बैठी होती है।
अनुशंषा • उनके साथ विचारपूर्ण, व्यक्तिगत तौर पर वार्तालाप करें तथा जोर दें कि टीकाकरण से उनके शारीरिक, सामाजिक या धार्मिक स्थिति पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।	**अनुशंषा** • समुदाय के साथ उनकी बात सुनने के लिए सामूहिक चर्चा का सत्र आयोजित कीजिये तथा व्यक्तिगत वार्तालाप का सत्र आयोजित कीजिये। उनकी बातें सुनने के बाद ही तथ्य आधारित संदेशों को उनके साथ साझा कीजिये। • उनके नकारात्मक प्रभाव को दूसरों पर पड़ने से रोकिये

*** पक्के विरोधियों द्वारा टीकों के विरोध के सन्दर्भ में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं तथा टीकाकरण अभियान से जुड़े अन्य कार्यकर्ताओं की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। पूरे विश्व में इन पक्के टीकाकरण विरोधियों द्वारा टीकाकरण से जुड़े स्वास्थ्य कर्मियों व कार्यकर्ताओं पर हमले, धमकियाँ, शत्रुता अत्यंत ही खेद का विषय रहा है। यदि टीकाकरण के विरोध में कोई शत्रुतापूर्ण विरोधी वातावरण बन रहा हो तो ऐसी स्थिति में इन विरोधियों से बिलकुल भी ना उलझें। आप अपना ध्यान ऐसे अन्य लोगों व समूहों पर केंद्रित करें जो टीकों के विरोधी नहीं हों। धमकी, या हिंसा की स्थिति में तत्काल पुलिस या कानून की पालना कराने वाले अन्य प्रतिनिधियों की सहायता लें।*

एक सन्देश फ्रेमवर्क /ढांचा तैयार करना

प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किसी भी व्यवहार विशेष, जैसे - टीकाकरण में सहयोग करना, को अपनाने के पीछे एक अलग कारण होते हैं। प्रभावी संदेशों को बनाने के व्यक्तियों और समूहों उन विशिष्ट कारणों /घटकों को समझना बहुत आवश्यक है।[3,4,7,9,11,15]

बाधाओं को समझना - चुनौतियां व सन्दर्भ

टीकाकरण को अपनाने में आने वाली कुछ सामान्य बाधाएं [23] निम्न हैं -:

कथित सकारात्मक /नकारात्मक परिणाम — टीकाकरण के क्या फायदे हैं और क्या नुकसान हैं?

कथित जोखिम — कितने लोग ऐसा समझते हैं कि टीकाकरण से व्यक्तिगत या सामुदायिक जोखिम होता है (जैसे - बीमारी से होने वाले दीर्घकालिक खतरे और टीकाकरण से होने वाले दीर्घकालिक खतरे की तुलना?)

कथित गंभीरता — टीकाकरण नहीं कराने के दुष्प्रभाव की गंभीरता (जैसे - यदि मैं टीके नहीं लगवाऊं तो यह कितना घातक हो सकता है ?)

कथित सामाजिक मानदंड — व्यक्ति किस हद तक विश्वास करता है कि उसका समुदाय /संस्कृति या जीवनसाथी /परिवार टीकाकरण को स्वीकार या अस्वीकार करेगा (जैसे - क्या मेरा धर्म मेरे बच्चों के टीकाकरण करवाने को स्वीकार करेगा ?)

कथित दैवीय इच्छा — व्यक्ति किस हद तक सोचता है कि प्रभु /अल्लाह टीकाकरण को स्वीकार करता है (जैसे - क्या टीकाकरण करवाने में प्रभु /अल्लाह की मर्ज़ी है और क्या यह हमारे धार्मिक ग्रंथों के अनुकूल है ?)

कथित आत्मबल — व्यक्ति किस हद तक यह विश्वास करता है कि वह टीकाकरण को अपना सकता /सकती है अगर वह चाहे तो। (जाइए - क्या मेरे पास उतनी जानकारी और क्षमतायें हैं जो कि टीकाकरण करवाने के लिए आवश्यक हैं ?)

सहजकर्ता को समझना - कौन और क्या ?

एक व्यक्ति को टीकाकरण अपनाने के लिए क्या प्रेरित /प्रभावित करते हैं यह जानना महत्वपूर्ण है। प्रभावित करने वाले ये कारक उचित कदम उठाने में सहयोग करते हैं - टीकाकरण की उपलब्धता को सुनिश्चित करने में एक सकारात्मक वातावरण बनाना, सामाजिक सहयोग तथा प्रभावशाली व्यक्तियों की स्वीकृति पाना, विश्वनीय स्रोतों से प्राप्त सटीक जानकारियां।[23] धार्मिक ग्रंथों/ धार्मिक फ्रेमवर्क के माध्यम से टीकाकरण सम्बन्धी दुष्प्रचार को दूर करने के लिए धार्मिक समुदाय के सामूहिक सहयोग और उत्साह के जरिये टीकाकरण को बढ़ावा देने और जन स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी देने में धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों का समाज में विशेष स्थान होता है। धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन अपने धार्मिक समुदाय और अन्य धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों को टीकाकरण के प्रति प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।[5,13]

टीकाकरण सन्देश के व्यापक /समग्र सिद्धांत

टीकाकरण के लिए प्रेरणादायी सन्देश टीके ना लगवाने वाले लोगों की समझाइश के लिए एक तथ्यपरक तथा सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील सन्देश होते हैं । लोगों के टीकाकरण के बारे में मिश्रित विचार और भावनाओं को टीकाकरण के पक्ष में मोड़ना ही वास्तविक लक्ष्य है।[4] अपेक्षित प्रभाव के लिए संदेशों को बार बार दोहराना और प्रचारित करना होता है। आप अपने धार्मिक समुदाय में लोगों के साथ चर्चा करने के लिए निम्न बातों का अनुसरण कर सकते हैं।:

तालिका 3: टीकों से सम्बंधित चर्चा हेतु बिंदु[4,11]

पूछें	प्रदान करें	प्रोत्साहित करें
लोगों से विस्तार से चर्चा करें कि टीकों के बारे में उन्हें क्या जानकारी है और उनकी क्या चिंताएं हैं।. *""आपको टीकाकरण के विषय में क्या जानकारी है ?" "आप इस तरह क्यों सोचते हैं ?"*	उनकी चिंताओं को समझें और टीकों के बारे में सही, स्पष्ट , संक्षिप्त जानकारियां तथा व्यक्तिगत अनुभव भी साझा करें। *"ऐसा लगता है कि आपने टीकाकरण के बारे में सोचा है पर अभी भी आपकी कुछ चिंताएं हैं। क्या मैं आपके साथ आप द्वारा बताये गए टीकों से सम्बंधित मुद्दों पर विश्वसनीय, प्रतिष्ठित स्रोतों से प्राप्त कुछ जानकारी दे सकता हूँ ?"*	साझा की गयी जानकारियों के आधार पर चर्चा को आगे बढ़ाएं। चर्चा के आधार पर कार्यवाही को प्रोत्साहित करें। *"अपनी चर्चा आधार पर बताएं कि आप इन जानकारियों का किस प्रकार प्रयोग करेंगे ? याद रखिये, मैं आपकी किसी भी चिंताओं पर चर्चा करने के लिए उत्सुक हूँ।"*

तालिका 4- टीकों से सम्बन्धित चर्चा /संदेशों में "करने योग्य" और "ना करने योग्य" बिंदु[4,7,11,15]

"करने योग्य" बिंदु	"ना करने योग्य" बिंदु
समानुभूति पूर्वक करुणा पूर्ण तरीके से बात करें।.	चर्चा के दौरान शर्मिंदगी, आलोचनात्मक टिप्पणी और निर्णय लेने जैसी बातें ना करें।.
अपने धार्मिक समुदाय में टीकों से सम्बंधित व्याप्त अफवाहों, भ्रांतियों, गलत धारणाओं के बारे में सजग रहें।	गलत या भ्रामक जानकारियों को दोहराएं मत या उन पर बहस ना करें। ऐसा करने से गलत धारणाओं को बढ़ावा मिलेगा इसके बजाय तथ्यपरक सूचनाओं को साझा करें।
लोगों को सलाह देने से पहले उनके भय और चिंताओं को सुनें। *"मैं आपकी चिंताओं को समझाता हूँ. आपके सवाल वाज़िब हैं और आपको और जानकारी लेने का अधिकार हैं"* - इस प्रकार से आपसी विश्वास बनाना और बातचीत जारी रखना फायदेमंद होता हैं।.	लोगों के भय, चिंताओं और संदेह को ख़ारिज/नज़रअंदाज़ ना करें। वास्तविक और अतिरंजित /अतिश्योक्तिपूर्ण भय किसी चिकित्सकीय शब्दजाल या आंकड़ों से दूर नहीं किया जा सकता। लोगों के पास बातें ना मानने के अपने वैध कारण हो सकते हैं और ऐसी स्थिति में विश्वास ज़माने का सही तरीका उनकी भावनाओं और चिंताओं को सही मानते हुए उसे दूर करना हैं।
लोगों को समय और मौका दें कि वो नई जानकारियों को समझ सकें और प्रश्न /सवाल पूछ सकें।	तत्काल बात मानने के लिए लोगों पर दबाव ना डालें।
टीकों पर चर्चा करते समय सकारात्मक भावनाओं को प्रदर्शित करें।.	टीकों के प्रति संकोच /हिचकिचाहट या टीके नहीं लगवाने के नकारात्मक पक्ष को ज्यादा तवज़्ज़ो ना दें।
टीकाकरण से जुड़े लोगों की प्रंशसा करें, और उन्हें उनके काम के लिए प्रोत्साहित करें।	उन लोगों को जबरदस्ती टीके लगवाने के लिए विवश और शर्मिंदा ना करें।
टीकाकरण से सम्बंधित अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करें और टीकाकरण करवाने के सरल-सुगम तरीके बताएं ।	जानकारियों को अत्यधिक चिकित्सकीय शब्दों या आंकड़ों के प्रयोग से भारी /नीरस ना बनायें।
सन्देश छोटे और संक्षिप्त रखें तथा मुख्य संदेशों को दोहराते रहें।	तकनीकि शब्दजाल या जटिल शब्दों का प्रयोग ना करें।
टीकों से सम्बंधित संदेशों को स्थानीय परिप्रेक्ष्य और सन्दर्भों से जोड़ें।	किसी भी व्यक्ति, संस्था या संस्थानों के प्रति नकारात्मक वक्तव्य ना दें।
जिन जानकारियों को आप जानते हैं उन्हें पूरे विश्वास के साथ लोगों के साथ साझा करें।	जिन प्रश्नों /सवालों के जवाब आप नहीं जानते उनके उत्तर ना दें बल्कि आप ऐसे प्रश्न पूछने वालों को किसी विश्वसनीय स्रोत से मिलवाएं जो उन प्रश्नो के सही जवाब दे सके।

सामान्य भ्रामक और गलत जानकारियों को सम्बोधित करना

स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन लोगों की चिंताएं व धारणाएं ध्यानपूर्वक सुनकर तथा समुदाय की भ्रामक धारणाएं, व चिंताओं से स्वास्थ्य कर्मियों और सेवा प्रदाताओं को अवगत कराकर उनके टीकाकरण कार्यक्रम को बेहतर और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसीप्रकार, स्वास्थ्य कर्मियों को अपने टीकाकरण कार्यक्रम तथा टीकाकरण सम्बन्धी स्वास्थ्य संदेशों को धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के साथ नियमित स्पष्ट रूप से साझा करना चाहिए। भ्रामक और गलत सूचनाओं को एक और तो जहाँ बार बार दोहराना ठीक नहीं रहता, वहीं दूसरी ओर ये भी महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार की भ्रामक और गलत सूचनाओं का प्रतिकार तथ्यपरक सूचनाओं के माध्यम से करना चाहिए। निम्न तालिका में तथ्यपरक सत्य वक्तव्य दिए गए हैं जिन्हें लोगों के अंदर टीकाकरण के प्रति व्याप्त भय, भ्रान्ति और गलत सूचनाओं को दूर करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

तालिका 5: सामान्य भ्रांतियों को दूर करने के लिए तथ्यपरक सूचनाएँ [21, 22]

भ्रांतियां	तथ्यपरक सूचनाएँ
टीकों से प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर होता है।	टीके लगने से हमारे शरीर को वायरस /विषाणु से लड़ने को अभ्यस्त होता है जिससे वस्तुतः हमारे शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र मज़बूत होता है।
टीकों के दुष्प्रभाव के कारण बड़ी संख्या में लोग मारे गए हैं।	टीकों के दुष्प्रभाव के कारण होने वाली मौतें बहुत ही कम संख्या में हैं। इसके विपरीत टीका ना लगवाने के कारण टीका रक्षक बीमारियों से ग्रसित होकर लाखों बच्चे और युवा अपनी जान से हाथ धो चुके हैं।
टीकों में माइक्रोचिप डालकर हमारी जनसँख्या को नियंत्रण करने के लिए इसे विकसित किया गया है।	टीकों के अंदर कोई माइक्रो चिप नहीं होती है और टीकों के माध्यम से किसी की भी गतिविधियों का पता लगाना या उस पर नज़र रखना असंभव है।
जिस बीमारी से बचाने के लिए टीके लगाए जाते हैं, टीकों से वही बीमारियां होने की सम्भावना होती है।	टीके जिन मृत बैक्टीरिया /वायरस से बनाये जाते हैं उनसे बीमारी होना असंभव है। जो टीके बहुत ही कमजोर जीवित वायरस से बनाये जाते हैं उन टीकों के लगवाने से बीमार होने की सम्भावना बहुत ही नाम-मात्र की होती है एवं ऐसे टीकों के लगने से बीमार पड़ने पर बीमारी की गंभीरता बिना टीका लगे उसी बीमारी से ग्रसित होने पर बीमारी की गंभीरता से बहुत ही काम होती है। जबतक कोई व्यक्ति कोई अन्य बीमारी से ग्रसित ना हो और उसका प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर ना हो तब तक टीका लगवाने से संक्रमण नहीं फ़ैल सकता।
टीकों से कैंसर होता है।	टीकों से कैंसर नहीं होता है। वस्तुतः कुछ टीके (जैसे गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से बचाव का HPV नामक टीका) कैंसर से बचाव के लिए ही होते हैं। पिछले कुछ दशकों में पूरे विश्व में कैंसर के बढ़ने के कई कारण हैं , जैसे - जीवनशैली में बदलाव, ऊँची जीवन प्रत्याशा, तथा बेहतर निदान तकनीकें।
टीकों से बाँझपन या नपुंसकता हो सकती है।	ऐसा कोई भी टीका नहीं है जिससे बाँझपन या नपुंसकता हो सकती है।
टीके आपका DNA बदल सकते हैं।	कुछ टीके mRNA टीकों के रूप में जाने जाते हैं (ये टीकों का एक प्रकार होता है जिसमे टीके शरीर की कोशिकाओं को प्रतिरक्षण तंत्र को प्रोटीन निर्माण के लिए क्रियाशील करते हैं) । mRNA टीके किसी भी स्थिति में डीएनए /DNA में नहीं बदल सकते और ना ही किसी भी हालत में mRNA मानव शरीर के डीएनए /DNA को नहीं बदल सकते। ज्यादातर टीके प्रोटीन से या उन्हीं बीमारियों के नन्हे कमजोर या मृत वायरस /बैक्टीरिया से बनाये जाते हैं। mRNA हमारे शरीर की कोशिकाओं को प्रोटीन बनाने हेतु निर्देश देते हैं ताकि हमारा शरीर प्राकृतिक प्रतिरक्षण तंत्र को विकसित कर हमारे शरीर का बीमारियों से बचाव कर सके।
टीकों में नुकसानदायक रसायन होता है।	टीके जिनसे भी बनते हैं उनका गहन परीक्षण /जांच किया जाता है ताकि प्रत्येक स्तर पर इसे सुरक्षित पाया जा सके। इंसानों को लगाने से पहले इन टीकों का जानवरों पर गहन परीक्षण किया जाता है। उसके बाद इन टीकों का सैंकड़ों - हज़ारों लोगों /इंसानों पर सख्त निगरानी में परीक्षण किया जाता है और तब जाकर इनको आम लोगों को लगाया जाता है। टीकों के निर्माण में जो भी अवयव /घटक शामिल होते हैं , उनके सभी अवयवों के गुणवत्ता की जांच नियमित रूप की जाती है ताकि टीकों की गुणवत्ता उच्चतम स्तर तक सुनिश्चित की जा सके और टीके इंसानों के लिए सुरक्षित हों।

भ्रांतियां	तथ्यपरक सूचनाएँ
हर्ड इम्युनिटी के कारण टीकों की आवश्यकता नहीं है।	हर्ड इम्युनिटी से आशय- यह है कि यदि पर्याप्त लोग प्रतिरक्षित (Immune) हों तो किसी समाज या समूह में रोग के फैलने की शृंखला को तोड़ा जा सकता है और इस प्रकार रोग को उन लोगों तक पहुँचाने से रोका जा सकता है, जिन्हें इससे सबसे अधिक खतरा हो या जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है।. हर्ड इम्युनिटी तक पहुंचने के लिए जनसँख्या के एक बहुत बड़ा भाग का प्रतिरक्षित होना आवश्यक है (जैसे खसरे से प्रतिरक्षण के लिए 95 % जनसँख्या में हर्ड इम्युनिटी होना आवश्यक है)। बिना टीकाकरण किये इतनी बड़ी जनसँख्या का प्रतिरक्षण स्तर इतने उच्च स्तर तक लाने में बहुत समय लगेगा और तब तक बहुत सारे लोग बीमारी से मारे जायेंगे। व्यापक टीकाकरण से हर्ड इम्युनिटी को शीघ्रता से सुरक्षित तौर पर प्राप्त कर लिया जाता है।
टीके आवश्यक नहीं हैं क्योंकि ये बीमारी मेरे देश में नहीं है।	यद्यपि टीकाकरण से बहुत सी टीका रक्षित बीमारियों के प्रसार को बहुत से देशों में नगण्य कर दिया गया है, परन्तु कई अन्य देशों में इन बीमारियों का प्रसार बहुत अधिक है। यात्रियों के माध्यम से अनजाने में ये बीमारियां किसी भी देश में फ़ैल सकती हैं यदि उस देश में प्रभावी टीकाकरण नहीं हुआ हो। कुछ ऐसे लोग भी कम संख्या में होते हैं जिनका टीकाकरण नहीं हो सकता (जैसे - गंभीर एलर्जी या कमजोर प्रतिरक्षण तंत्र के कारण) और उनके बचाव का एक ही रास्ता होता है कि उनके आसपास के लोग उन्हें बीमारियों से संक्रमित ना कर दें। टीकाकरण से बीमारियों के फैलाव को रोका जाता है।
यदि हम उचित साफ़ सफाई और स्वच्छता बनायें रखें तो बीमारी नहीं फैलेगी।	बहुत सारे संक्रमण साफ़-सफाई के बावजूद भी फ़ैल जाते हैं। यदि टीके नहीं लगे हैं तो कुछ ऐसी बीमारियां भी हैं (जैसे पोलियो और खसरा) जो तेजी से फिर से लौटआएँगी।
विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए एक साथ कई टीके लगाने से बच्चों को नुकसान हो सकता है।	वैज्ञानिक शोधों ने ये सिद्ध किया है कि विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए एक साथ कई टीके लगाने का सामान्य स्वस्थ बच्चों पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है। वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि कई टीके एक साथ देने पर भी उतने ही सुरक्षित और कारगर हैं जितने अलग-अलग समय एक एक करके देने पर। कई टीके एक साथ देने पर कोई भी दुष्प्रभाव नहीं होता है।
टीकाकरण से आटिज्म (स्वप्रेम/ स्वलीनता - एक प्रकार की मानसिक बीमारी) नामक बीमारी होती है।	टीकों और ऑटिस्टिक विकारों में सम्बन्ध का कोई प्रमाण नहीं है। 1990 के दशक में केवल एक शोध प्रकाशित हुआ जिसमें खसरा-मम्प्स- रूबेला के टीकों और आटिज्म में संभावित सम्बन्ध के बारे में लिखा गया था। बाद के परीक्षणों से सिद्ध हुआ कि उक्त शोध पूरी तरह से गलत था जिसके बाद उस शोध के प्रकाशन और वितरण को रोक दिया गया।.
टीके महंगे होते हैं।	ज्यादातर मामलों में टीके सरकार या गैर सरकारी समाजसेवी संगठनों द्वारा मुफ्त में लगवाए जाते हैं क्योंकि ये जनसाधारण के लिए बहुत ही लाभकारी होते हैं। फिर भी , कुछ मामलों में टीकों पर कोई छूट नहीं मिलती और अधिक मूल्य होने की वजह से कुछ लोग इन टीकों को नहीं लगवा पाते। ऐसे समूहों को सब्सिडी /छूट या मुफ्त टीकों की किन्हीं योजनाओं से जोड़ कर इनकी सहायता करनी चाहिए साथ ही इनको टीके ना लगवाने पर बीमारी के इलाज में होने वाले अत्यधिक खर्च की तुलना टीकों के मूल्य से कर इनको टीकों के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सोशल मीडिया पर सन्देश

अभियान विवरण

वर्तमान वैश्विक समुदाय में सोशल मीडिया लोगों के व्यवहार परिवर्तन में काफी प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। विभिन्न मीडिया प्लेटफार्म पर बार-बार सन्देश दोहराने का अधिक प्रभाव पड़ता है। धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन, धार्मिक/आस्थावान संगठन, धार्मिक/आस्थावान गैर सरकारी संस्थाएं अपनी प्रभावपूर्ण स्थिति का उपयोग कर टीकाकरण को बढ़ावा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।[13] स्वास्थ्य मंत्रालय, चिकित्सा व विज्ञान निकाय, और गैर सरकारी संगठन धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के सोशल मीडिया संदेशो को उपयोग कर धार्मिक/आस्थावान लोगों के मध्य अपने प्रभाव को बढ़ा सकते हैं।

विश्वस्त स्रोतों से लिए गए धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के व्यक्तिगत अनुभव लोगों के व्यवहार को प्रभावी रूप से प्रभावित करते हैं। ये व्यक्तिगत अनुभव सोशल मीडिया या व्यक्तिगत मुलाकातों के दौरान लोगों के साथ साझा किये जाने चाहिए। धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजनों के सहयोग से लगाए गए टीकाकरण शिविरों के माध्यम से लोगों को टीकाकरण अपनाने और टीकाकरण सम्बन्धी लिंग भेदभाव, सामाजिक आर्थिक असमानता के कारण भेदभाव, जैसी सामाजिक बाधाओं को दूर करने के लिए सामूहिक रूप से प्रेरित और प्रोत्साहित किया जा सकता है। उन व्यक्तियों के व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया जाना चाहिए जिन्होंने टीकाकरण के सम्बन्ध में सकारात्मक भूमिका निभाई हो (जैसे - किसी परिवार ने धार्मिक वास्तविकता को समझते हुए टीकाकरण को अपनाया हो, या पहले टीकाकरण विरोधी हो और बाद में समझाइश के बाद टीकाकरण का समर्थक बन गया हो आदि), टीकारक्षित बीमारी से पीड़ित होने के पश्चात् ठीक हुआ हो, या ऐसे व्यक्ति जिन्होंने टीका रक्षित बीमारियों के कारण निकट के व्यक्ति को खोया हो।.

धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन टीकाकरण को धार्मिक दृष्टिकोण से बढ़ावा सोशल मीडिया पर संदेशों के माध्यम से दे सकते हैं। ईसाईयों, मुस्लिमों और हिन्दुओं के लिए नीचे दिए गए सोशल मीडिया सन्देश सम्बंधित समुदायों की जागरूकता के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं-.

व्यक्तिगत अनुभव उदाहरण एवं नमूने

" मैं अपने बच्चे को जानलेवा बीमारियों से बचाना चाहता हूँ। मुझे मालूम है कि टीके बीमारियों से बचाव के लिए सुरक्षित एवं प्रभावी हैं। मैं अपने बच्चे को सभी टीके लगवाने के लिए ले जाता हूँ।"

मैंने अपने बच्चे टीका लगवाया क्योंकि

____

मैं जानता हो कि मैं / मेरा बच्चा /बच्ची ________________बीमारी से सुरक्षित है।

ईसाई धर्म से सम्बंधित सन्देश

- टीकाकरण बीमारियों से बचाव का और जीवन बचाने का एक सुरक्षित और प्रभावी तरीका है। आप खुद को, अपने परिवार और अपने समुदाय को बीमारियों से बचाएं। आज ही टीकाकरण करवाएं !
- टीकाकरण करवाने से आप अपने परिवार और अपने ईसाई समुदाय को गंभीर बीमारियों से सुरक्षित और स्वस्थ्य रख सकेंगे। अपने निकटतम स्थानीय स्वस्थ्य केंद्र पर जाएँ और यह सुनिश्चित करें कि आपको और आपके बच्चों को सभी आवश्यक टीके लग चुके हैं।
- प्रत्येक जीवन प्रभु के लिए कीमती है। यदि बचाव नहीं किया गया तो बहुत सारी बीमारियों से जीवन भर की जटिलताएं हो सकती हैं यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है।टीके सुरक्षित एवं प्रभावी हैं और वे जीवन बचाते हैं। जीवन का चुनाव करें। अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर आज ही अपने परिवार का टीकाकरण करवाएं।

- टीकों के माध्यम से एक ऐसे विश्व का निर्माण किया जा सकता है जहाँ टीका रक्षित बीमारियों से एक भी मौत ना हो। टीके प्रभु द्वारा दिए संभावित अवसरों को प्राप्त करने का एक सुरक्षित और असरदार माध्यम हैं।
- आपके परिवार और समुदाय को आपकी आवश्यकता है। आज ही या अतिशीघ्र अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर टीका लगवाएं।
- आइये, अपने समुदाय को मज़बूत बनायें । जब तक सभी सुरक्षित ना हों, कोई भी सुरक्षित नहीं रह सकता। सभी आवश्यक टीके लगवा कर हम अपने और अपने मित्रों के परिवारों तथा अपने समुदाय को सुरक्षित बनायें।
- बच्चे, प्रभु का एक उपहार हैं और वे सर्वोत्तम के हकदार हैं। टीका रक्षित बीमारियां खतरनाक होती हैं और इनसे कई प्रकार की गंभीर जटिलताएं जैसे - न्यूमोनिया, अंधता आदि और यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। इन पीड़ाओं से टीकों द्वारा बचा जा सकता है। हमारे बच्चों को बचाइए ! सुनिश्चित करें कि उन्हें सभी आवश्यक टीके लगे हों !
- ईसाई होने के नाते ये मेरी नैतिक जिम्मेदारी कि मैं दूसरों की खतरनाक बीमारियों से रक्षा करूँ। टीके बीमारियों से बचाने और हमारे जीवन को सुरक्षित रखने का एक सबसे सुरक्षित और असरदार तरीका है जो कि ना केवल हमारे स्वास्थ्य आवश्यक है बल्कि उन लोगों के प्रति भी आवश्यक है जो सबसे अधिक जोखिम वर्ग से हैं।
- एक चर्च /गिरजाघर के रूप में, हमें यह सुनिश्चित करने के लिए बोलना आवश्यक है कि सभी को टीका रक्षित बीमारियों के सभी टीके लगवाने चाहिए। चर्च / गिरिजाघरों को इस संसार को सभी के लिए समावेशित और न्यायसंगत बनाने के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का नेतृत्व करना होगा।
- बीमारियों का बोझ गरीबों और सामाजिक रूप से वंचितों पर भारी पड़ता है। प्रभु ईसा मसीह के उदाहरण को अपनाते हुए हमें विश्व भर के सर्वाधिक जोखिमपूर्ण स्थिति में रह रहे लोगों तथा जरूरतमंदों को नहीं भूलना चाहिए। आपके द्वारा सभी उपलब्ध टीके लगवाने से आप इन बीमारियों को फैलने से रोक सकेंगे जो मानवता के लिए एक प्रेम भरा कार्य होगा।
- हमारे समुदाय का उत्कर्ष टीकों पर निर्भर करता है। जब परिवार बीमारियों, अशक्तता और बीमारियों के इलाज के खर्च से बचा रहता है तो यह परिवार और समाज दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

मुस्लिम धर्म से सम्बंधित सन्देश

- टीकाकरण बीमारियों से बचाव का और जीवन बचाने का एक सुरक्षित और प्रभावी तरीका है। आप खुद को, अपने परिवार और अपने समुदाय को बीमारियों से बचाएं। आज ही टीकाकरण करवाएं !
- ईद मुबारक ! साथ में स्वस्थ रहना बेहतर है। टीकाकरण से आपका परिवार और हमारा मुस्लिम समुदाय गंभीर बीमारियों से सुरक्षित बचा रहेगा।
- प्रत्येक जीवन अल्लाह के लिए कीमती है। यदि बचाव नहीं किया गया तो बहुत सारी बीमारियों से जीवन भर की जटिलताएं हो सकती हैं यहाँ तक कि मौत भी हो सकती है। टीके सुरक्षित एवं असरदार हैं और वे जीवन बचाते हैं। अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर आज ही अपने परिवार का टीकाकरण करवाएं।.
- टीकों के माध्यम से एक ऐसे विश्व का निर्माण किया जा सकता है जहाँ टीका रक्षित बीमारियों से एक भी मौत ना हो। टीके अल्लाह द्वारा दिए संभावित अवसरों को प्राप्त करने का एक सुरक्षित और असरदार माध्यम हैं।
- आपके परिवार और समुदाय को आपकी आवश्यकता है। आज ही या अतिशीघ्र अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर टीका लगवाएं!
- खुद का और अपने आस पास के लोगों का बचाव करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। जैसा की पैगम्बर मुहम्मद साहब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा है , "हमारा शरीर एक है, और यदि हमारे शरीर के किसी भी भाग में दर्द होगा तो हमारा पूरा शरीर बुखार से तड़पेगा ।"

- "यदि कोई किसी की जान बचाता है तो इसका अर्थ है कि वह पूरे मानवता /इंसानियत की जान बचाता है।" जब तक सभी सुरक्षित ना हों, कोई भी सुरक्षित नहीं रह सकता। अल्लाह का सम्मान करें और सभी आवश्यक टीके लगवा कर हम अपने और अपने मित्रों के परिवारों तथा अपने समुदाय को सुरक्षित बनायें।
- बच्चे, अल्लाह पाक की देन हैं और वे सर्वोत्तम के हकदार हैं। टीका रक्षित बीमारियां खतरनाक होती हैं और इनसे कई प्रकार की गंभीर जटिलताएं जैसे - न्यूमोनिया, अंधता आदि और यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। इन पीड़ाओं से टीकों द्वारा बचा जा सकता है। हमारे बच्चों को बचाइए !
- मुसलमान होने के नाते ये मेरी नैतिक जिम्मेदारी कि मैं दूसरों की खतरनाक बीमारियों से रक्षा करूँ। टीके बीमारियों से बचाने और हमारे जीवन को सुरक्षित रखने का एक सबसे सुरक्षित और असरदार तरीका है जो कि ना केवल हमारे स्वास्थ्य आवश्यक है बल्कि उन लोगों के प्रति भी आवश्यक है जो सबसे अधिक जोखिम वर्ग से हैं।
- अल्लाह ने हर बीमारी का इलाज बनाया है। अपने धार्मिक समुदाय में हमें ये सुनिश्चित करना है कि समुदाय के सभी सदस्य टीका रक्षित बीमारी से बचने के लिए टीके लगवाएं।

  बीमारियों का बोझ गरीबों और सामाजिक रूप से वंचितों पर भारी पड़ता है। पैगम्बर मुहम्मद साहब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उदाहरण को अपनाते हुए हमें विश्व भर के सर्वाधिक जोखिमपूर्ण स्थिति में रह रहे लोगों तथा जरूरतमंदों को नहीं भूलना चाहिए। आपके द्वारा सभी उपलब्ध टीके लगवाने से आप इन बीमारियों को फैलने से रोक सकेंगे जो मानवता के लिए एक प्रेम भरा कार्य होगा।.
- हमारे समुदाय का उत्कर्ष टीकों पर निर्भर करता है। जब परिवार बीमारियों, अशक्तता और बीमारियों के इलाज के खर्च से बचा रहता है तो यह परिवार और समाज दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

हिन्दू धर्म से सम्बंधित सन्देश

- टीकाकरण बीमारियों से बचाव का और जीवन बचाने का एक सुरक्षित और प्रभावी तरीका है। आप खुद को, अपने परिवार और अपने समुदाय को बीमारियों से बचाएं। आज ही टीकाकरण करवाएं !
- हमें "सर्व भूता दया" अर्थात सभी जीवों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव रखना के प्रति वचनबद्ध रहना है। टीकाकरण करवाने से हम अपने और सभी हिन्दू परिवारों को गंभीर बीमारियों से सुरक्षित रख सकेंगे।
- जीवन पवित्र है। इसे बचाव नहीं किया गया तो बहुत सी बीमारियां हो सकती हैं, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। टीके सुरक्षित और प्रभावी हैं और जीवन रक्षक भी। अपने निकटतम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर आज ही टीकाकरण करवाएं।
- टीकों के माध्यम से एक ऐसे विश्व का निर्माण किया जा सकता है जहाँ टीका रक्षित बीमारियों से एक भी मौत ना हो। टीके भगवान द्वारा दिए संभावित अवसरों को प्राप्त करने का एक सुरक्षित और असरदार माध्यम हैं।
- टीकाकरण और धर्म दोनों का एक साझा उद्देश्य है - कष्टों को दूर करते हुए मानवता को खुशहाल बनाना। आज ही टीके लगवाएं ! सुनिश्चित करें कि आपने टीकों की सभी आवश्यक खुराकें लीं हों!
- टीके जीवन बचाते हैं। सभी लोगों के जीवन में खुशहाली और स्वतंत्र रूप से जीवन जेने देने के क्रम में हमें स्वयं का बचाव करना और अपने आस पास के लोगों का बचाव करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।
- हममें से कोई भी सुरक्षित नहीं है जब तक कि हम सभी सुरक्षित नहीं हैं। सभी को सम्मान और सुरक्षा दें तथा अपने मित्रों और परिवारों को सभी टीके लगवाना सुनिश्चित करें।
- बच्चे, प्रभु का एक उपहार हैं और वे सर्वोत्तम के हकदार हैं। टीका रक्षित बीमारियां खतरनाक होती हैं और इनसे कई प्रकार की गंभीर जटिलताएं जैसे - न्यूमोनिया, अंधता आदि और यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। इन पीड़ाओं से टीकों द्वारा बचा जा सकता है। हमारे बच्चों को बचाइए !

- हिन्दू होने के नाते ये मेरी नैतिक जिम्मेदारी कि मैं दूसरों की खतरनाक बीमारियों से रक्षा करूँ। टीके बीमारियों से बचाने और हमारे जीवन को सुरक्षित रखने का एक सबसे सुरक्षित और असरदार तरीका है जो कि ना केवल हमारे स्वास्थ्य आवश्यक है बल्कि उन लोगों के प्रति भी आवश्यक है जो सबसे अधिक जोखिम वर्ग से हैं।
- बीमारियों का बोझ गरीबों और सामाजिक रूप से वंचितों पर भारी पड़ता है। मानवता को स्वयं से महत्वपूर्ण समझते हुए हमें विश्व भर के सर्वाधिक जोखिमपूर्ण स्थिति में रह रहे लोगों तथा जरूरतमंदों को नहीं भूलना चाहिए। आपके द्वारा सभी उपलब्ध टीके लगवाने से आप इन बीमारियों को फैलने से रोक सकेंगे जो मानवता के लिए एक प्रेम भरा कार्य होगा।
- हमारे समुदाय का उत्कर्ष टीकों पर निर्भर करता है। जब परिवार बीमारियों, अशक्तता और बीमारियों के इलाज के खर्च से बचा रहता है तो यह परिवार और समाज दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

सोशल मीडिया हेतु मार्गदर्शन

टीकों से सम्बंधित संचार /सन्देश बार- बार और विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों से भेजने /साझा करने से मुख्य संदेशों को अधिकाधिक लोगों तक असरदार तरीके से पहुँचाया जा सकता है। धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों द्वारा दिए गए संक्षिप्त , सारगर्भित सन्देश, जिनके साथ कोई सम्बंधित तस्वीर भी हो, अक्सर काफी असरकारक होते हैं। संदेशों को उपयुक्त और परिस्थिति अनुकूल बनाने हेतु निम्न दिशानिर्देशों का पालन करिये-

तालिका 6 : सोशल मीडिया हेतु मार्गदर्शन

सोशल मीडिया हेतु माध्यम	सिफारिश /सुझाव /संस्तुति
फेसबुक	सन्देश 40 -50 अक्षरों के होने चाहिए। फोटो (30 MB अधिकतम) तथा वीडियो (10 G B अधिकतम) अपलोड कर सकते हैं।
ट्विटर	सन्देश 280 अक्षरों से अधिक के नहीं हो सकते। छोटे पोस्ट्स (100 अक्षरों से काम के) ज्यादा बेहतर होते है। फोटो (5 MB अधिकतम) अपलोड कर सकते हैं।
लिंक्डइन	सन्देश 700 अक्षरों से अधिक के नहीं हो सकते। 100 अक्षरों से काम के पोस्ट ज्यादा बेहतर होते है।
इंस्टाग्राम	सन्देश 2200 अक्षरों से अधिक के नहीं हो सकते। 125 अक्षरों से कम के पोस्ट ज्यादा बेहतर होते है। फोटो (30 MB अधिकतम) तथा वीडियो (4 GB अधिकतम) अपलोड कर सकते हैं।
व्हाट्सअप	स्टेटस अपडेट लगाने के लिए सन्देश 700 अक्षरों से अधिक के नहीं हो सकते। वीडियो की अधिकतम लम्बाई 30 सेकण्ड्स हो सकती है।
टिकटॉक	वीडियो का विवरण बताने के लिए सन्देश 2200 अक्षरों से अधिक के नहीं हो सकते। वीडियो की अधिकतम लम्बाई 10 मिनट हो सकती है। 21 -34 सेकण्ड्स के वीडियो सबसे अच्छे होते हैं।
वैक्सीन हैशटैग	#VaccinesWork [UNICEF द्वारा चलाया जा रहा वैश्विक कैंपेन] #Vaccinated [खुद/स्वयं से सम्बंधित टीकाकरण के अनुभवों के लिए सर्वोत्तम] #SleeveUp [कोविड -19 टीकों को बढ़ावा देने के लिए]

संलग्नक /एनेक्सचर

संलग्नक /एनेक्सचर -1 : टीकों को बढ़ावा देने के लिए अंतर्धार्मिक परिचर्चा

ये संक्षिप्त दिशा-निर्देश धार्मिक नेताओं, अंतर्धार्मिक परिषदों, आस्था-आधारित गैर सरकारी संगठनों, परम्परागत चिकित्सकों, स्वास्थ्य मंत्रालय, तथा गैर सरकारी संगठनों के मध्य टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु अंतर्धार्मिक परिचर्चा करने में सहयोग के उद्देश्य से बनाया गया है। अंतर्धार्मिक चर्चा द्वारा टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है ताकि एक सहयोगी और आपसी संवाद के जरिये स्वास्थ्य एवं सामाजिक मुद्दों पर व्यवहार परिवर्तन की मुहिम चलाई जा सके। साथ ही धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों और टीकाकरण से जुड़े लोगों के मध्य एक नवाचार युक्त सहभागिता (इन्नोवेटिव पार्टनरशिप) स्थापित की जाये ताकि वे अपने साझा उद्देश्यों पर सहमत होते हुए जोखिम वर्ग और प्राथमिकता समूहों को टीकाकरण सुनिश्चित करवा सकें। **यहाँ यह आवश्यक है कि धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों के साथ सहभागिता करने के लिए स्थिति बिगड़ने का इंतज़ार नहीं करना हैं। उनके साथ विश्वास के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करते हुए एक अच्छे संबंधों को बनाते हुए टीकाकरण को बढ़ावा देने में उनका सहयोग प्राप्त करना है।** धार्मिक /आस्था आधारित संस्थाओं तथा धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों को तकनीकि कार्य समूह के साथ मिलकर धार्मिक /आस्थावान समुदायों को दीर्घ कालिक रूप से जोड़ कर उन्हें टीकाकरण के लिए प्रेरित कर सकते हैं। समुदाय के साथ लगातार बैठकें करने तथा उनसे फीडबैक लेते रहना से लोगों के टीकाकरण सम्बन्धी विचारों को जानने और उनके भय और चिंताओं को दूर करने का तथा उनके फीडबैक के अनुभवों के आधार पर असरदार संदेशों को बनाने का अवसर मिलता है।

टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए नवाचार युक्त सहभागिता (इन्नोवेटिव पार्टनरशिप) क्या है ?

"टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए टीकाकरण कर्मियों/ टीकाकरण से जुड़े लोगों तथा धार्मिक / आस्थावान प्रभावीजनों के बीच सहभागिता जिसमें कि दोनों एक साझा उद्देश्य (टीकाकरण को बढ़ावा देना) को प्राप्त करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग एक दूसरे के सहयोग के लिए करते हैं।"

1. प्रत्येक स्टेकहोल्डर समूहों के मुख्या सदस्यों के साथ अच्छे सम्बन्ध बना कर रखिये। लोगों को एक दूसरों से मिलने - मिलाने का प्रयास कीजिये।
2. प्रत्येक धार्मिक/आस्था समूहों /समुदायों के मुख्य लोगों के साथ संवाद स्थापित करके एक मंच /फोरम शुरू कर सकते हैं। इन फोरम /मंचों के साथ अपने उद्देश्य साझा कर सकते हैं - जैसे मंच से जुड़े लोगों के साथ मिलकर टीकाकरण को बढ़ावा देने और लोगों के अंदर टीकों के प्रति उत्पन्न भय, भ्रांतियों, और गलत धारणाओं दूर करने हेतु असरदार सन्देश बना सकते हैं।.
3. प्रत्येक धार्मिक/आस्था समूहों के सामान संख्या में प्रतिनिधियों, स्वास्थ्य कर्मियों और गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित कर सर्वमान्यस्थान और समय पर बैठकें आयोजित करें।
4. बातचीत शुरू करने के लिए गोलाई (गोल आकार) में बैठिये। बैठक की शुरुआत किसी एक धर्मिक /आस्थावान प्रभावीजन से प्रार्थना से करने का आग्रह करिये। तत्पश्चात उपस्थित लोगों के साथ साझा मुद्दे पर चर्चा करना प्रारम्भ करिये, जैसे -
   - *जन-समुदाय के लिए हमारे (टीकाकरण से सम्बंधित) साझा हित या लक्ष्य क्या हैं ? [यदि संभव हो तो उपस्थित लोगों के साथ स्थानीय आंकड़े या सूचनाएं साझा करिये]*
   - *इन लक्ष्यों की पाने के लिए व्यापक टीकाकरण कैसे करवाया जा सकता है ?*
   - *टीकाकरण के बारे में भ्रांतियों तथा गलत धारणाओं को दूर करने के लिए हम किस प्रकार मिलकर संवेदनशील और उपयुक्त तरीके से लोगों के चर्चा कर सकते हैं?*

   उपस्थित जनों द्वारा इन प्रश्नों के जवाब देने के लिए प्रेरित करिये और उनके जवाबों को नोट करिये।

5. बैठक का समापन किसी अन्य धर्मिक /आस्थावान प्रभावीजन से प्रार्थना से करने का आग्रह करिये। बैठक में हुई चर्चा को नोट करिये तथा उस सभी के साथ पढ़ कर साझा करिये, जिसमें सभी लोगों की भूमिकाएं स्पष्ट तौर पर लिखीं हों। अगली बैठक की तारीख, स्थान और समय भी तय कर लीजिये।

उदाहरण:

- टीकाकरण पर एक परिचर्चा आयोजित कीजिये जिसमें सभी धार्मिक /आस्था समूहों के प्रभावीजन एवं चकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञों को आमंत्रित कीजिये तथा उनसे टीकाकरण समबन्धित विभिन्न प्रश्नों को पूछिए। ऐसी परिचर्चा भिन्न भिन्न धार्मिक /आस्था समूहों के स्थलों पर भिन्न भिन्न लोगों के साथ आयोजित करें।
- एक रेडियो इंटरव्यू /साक्षात्कार जैसा मंचन करिये और विभिन्न धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों से टीकाकरण सम्बंधित व्याप्त भ्रांतियों, गलत धारणाओं पर धार्मिक /आस्था सम्बन्धी व्याख्यान सुनने के लिए पहले से तैयार प्रश्नों को पूछिए।
- हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई धार्मिक गुरुओं के साथ मिलकर सोशल मीडिया पर साझा करने के लिए एक एकीकृत लिखित विश्वसनीय सन्देश बनाइये, जिसमे टीकों के सुरक्षित और असरदार होने के बारे में कहा गया हो ।

संलग्रक /एनेक्सचर -2 : संगतपूर्ण अन्तर्धार्मिक टीकाकरण अभियान के लिए निर्देश

ये संक्षिप्त दिशा-निर्देश धार्मिक नेताओं, अंतर्धार्मिक परिषदों, परम्परागत चिकित्सकों, स्वास्थ्य मंत्रालय, वैश्विक तकनीकि स्वास्थ्य निकायों /संस्थाओं तथा दानदाताओं को टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु अंतर्धार्मिक परिचर्चा करने में सहयोग के उद्देश्य से बनाया गया है। विभिन्न धार्मिक /आस्था समूहों द्वारा बार-बार, स्पष्ट, संक्षिप्त, सारगर्भित एकीकृत संदेशों को साझा करना काफी असरदायी होता है।.

अंतर्धार्मिक परिचर्चा आयोजित करने तथा टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए *अंतर्धार्मिक परिचर्चा मंच /फोरम के दिशा-निर्देश* के अनुसार मुख्य संदेशों को निर्धारित करने के पश्चात् प्रत्येक स्टेकहोल्डर्स /समूहों के प्रमुखों को निम्न 7 बिंदुओं को अपनाकर टीकों से सम्बंधित अंतर्धार्मिक संदेशों को साझा करने के लिए असरदार मुहिम चलायी जा सकती है।.

- टीकों की स्वीकार्यता के अनुसार अपने समुदाय के लोगों को वर्गीकृत करिये (जैसे - जो टीकों का धार्मिक कारणों से बहुत विरोध करते हों, जो टीकाकरण के लिए समय नहीं निकाल पाते हों, जो लापरवाही के कारण टीका ना लगवाते हों, जो अज्ञानता के कारण टीके ना लगवाते हों आदि) और उसी अनुसार उपयुक्त संदेशों के माध्यम से टीकाकरण को बढ़ावा देने व जागरूकता के लिए मुहिम चलाइये।[7]
  - **लोगों को अवगत कराएं -** उन समूहों के बारे में लोगों को बताएं जो समूह टीकाकरण के लाभों के बारें में जानकारी रखते हैं यथा- टीके कहाँ लगते हैं , कौन कौन से टीके लगने चाहिए आदि और टीकाकरण अभियानों का सहयोग करते हों।
  - **इसे सार्थक बनायें-** उन समूहों को जो टीकाकरण के फायदों , टीका रक्षित बीमारियों के खतरों और गंभीरता से अनभिज्ञ (नावाकिफ) हैं, टीकाकरण के लिए उत्साहित /प्रेरित और जागरूक नहीं हैं।.
  - **इसे विश्वसनीय बनायें -** ऐसे समूह, जो टीकाकरण के लिए संकोच या विरोध करते हैं, उन्हें विश्वसनीय धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों एवं स्वास्थ्य कर्मियों के माध्यम से टीकों के सुरक्षित और असरदार होने के बारे में संदेशों को साझा करवाएं।
- टीकाकरण की बाधाओं से जुड़े सन्दर्भ विशेष को समझने के लिए वैयक्तिक सन्देश साझा करिये। टीकाकरण को बढ़ावा देने के लिए इस टूलकिट में पूर्व में दिए गए व्यवहार परिवर्तन के आसान संदेशों का प्रयोग करें।
- अधिकतम लोगों तक पहुँचने के लिए संचार के विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करते हुए टीकाकरण अभियान चलाएं। संदेशों को तकनीकि सहयोग (व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्वीटर आदि) और बिना तकनीकि सहयोग के (समूह चर्चा, व्यक्तिगत चर्चा आदि) लोगों से साझा करें।
- टीकाकरण सम्बन्धी अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करने और सभी धार्मिक /आस्था समूहों में एकता होने से लोगों पर ज्यादा असर पड़ता है। जब भी संभव हो, विश्वसनीय धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों के नाम, उनके वक्तव्यों की रिकॉर्डिंग और उनकी फोटो अपने संदेशों /चर्चाओं में शामिल करें।
- टीकाकरण की जो वैश्विक सफलताएं हैं उन्हें साझा करें। टीकाकरण को बढ़ावा देने में धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों के रणनीतिक योगदान की चार देशों की सफलताओं की कहानी को लोगों के साथ साझा करें।(भरोसेमंद व्यवहार के उदाहरण)

अन्तर्धार्मिक टीकाकरण संदेशों के फ्रेमवर्क और अभियान को विकसित करने हेतु टेम्पलेट /नमूना

<table>
<tr><td colspan="3">समुदाय के लोग: समुदाय के लोगों की प्राथमिकता के आधार पर सूची बनायें (प्रत्येक समूहों के लिए एक अलग सारणी बनायें)</td></tr>
<tr><td colspan="3">टीकों से सम्बन्धित व्यवहार परिवर्तन के उद्देश्य: इन लोगों में टीकाकरण को बढ़ावा कैसे दिया जाये , इसका बिंदुवार लक्ष्य तय करिये।</td></tr>
<tr><td colspan="3">चिंताए, सवाल और बाधाएं: इस टूलकिट के सेक्शन "टीकाकरण को बढ़ावा देने के प्रमुख कारक" को पढ़ें और समझें कि "लोग क्या सोचते और महसूस करते हैं"; "सामाजिक मानदंड व दवाब क्या हैं"; व्यक्तिगत प्रेरणा, टीके की उपलब्धता, व व्यवहारिक मुद्दे आदि।</td></tr>
<tr><td colspan="3">मूल सन्देश: यदि आपको लोगों से बात करने के लिए बहुत थोड़ा सा ही समय मिल पाए तो तैयार करें कि आप सिर्फ एक मिनट में दो या तीन लाइनों /पक्तियों में क्या मूल सन्देश देना चाहेंगे ? इतने कम समय में आप अंतधार्मिक दृष्टिकोण से किस प्रकार उनकी चिंताओं को दूर कर पाएंगे और उन्हें टीकाकरण के लिए प्रेरित कर पाएंगे।</td></tr>
<tr><td colspan="3">सहायक/अतिरिक्त सन्देश: इस लक्षित समूह के लिए आप तीन ऐसे संदेशों को लिखिए जो कि मुख्य रूप से टीके से सम्बन्धी उनकी चिंताओं, सवालों और बाधाओं को दूर करने के लिए हो। इन लक्षित समूहों के टीकाकरण सम्बन्धी संकोच /हिचकिचाहट को दूर करने के लिए अन्तर्धार्मिक मंच /फोरम में चर्चा करके उचित तथ्यों, उदाहरणों, व्यक्तिगत अनुभवों, तथा सम्बंधित धार्मिक उद्धरणों /तथ्यों को अपने संदेशों में सम्मिलित करें। इस टूलकिट में पूर्व में दिए गए "वैक्सीन पर विश्वास की मानसिकता /माइंडसेट" को पढ़ें व मार्गदर्शन प्राप्त करें।</td></tr>
<tr><td>सहायक/अतिरिक्त सन्देश 1:</td><td>सहायक/अतिरिक्त सन्देश 2:</td><td>सहायक/अतिरिक्त सन्देश 3:</td></tr>
<tr><td colspan="3">अभियान का अगला चरण: आप संचार के किन माध्यमों से इन संदेशों को साझा करेंगे और इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों, रेडियो, TV, सामूहिक चर्चा आदि के माध्यम से संदेशों को साझा किया जा सकता है। योजना बनायें कि इस अभियान /मुहिम को सभी धर्मिक आस्था समूहों में कैसे चलाया जा सकता है ? अभियान / मुहिम की समय सीमा तो तय करें।?</td></tr>
<tr><td>संचार के माध्यम:
▪
▪
▪
▪</td><td>धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजन:
▪
▪
▪
▪</td><td>समय सीमा:
▪
▪
▪
▪</td></tr>
</table>

संलग्नक /एनेक्सचर-3: धर्म /आस्था आधारित वैज्ञानिक तकनीकि संस्थाए /निकायों को जोड़ने के लिए निर्देश

ये संक्षिप्त दिशा-निर्देश धर्म/आस्था आधारित संस्थाओं, धर्म/आस्था आधारित स्वास्थ्य संस्थानों, स्वास्थ्य मंत्रालय, गैर सरकारी संस्थाओं, तथा स्वास्थ्य कर्मियों को विभिन्न संदेशों के माध्यम से टीकाकरण को बढ़ावा देने हेतु धार्मिक नेताओं का सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से बनाया गया है। सक्रिय रूप से संबंधों को बनाने तथा विभिन्न प्रभावीजनों के मध्य संवाद स्थापित करने से विश्वास और तालमेल स्थापित होता है जो कि सहयोगात्मक प्रयासों का आधार है। नियमित रूप से संवाद स्थापित करते रहने से खुले तौर पर परिचर्चा करने में आसानी होती है। स्थानीय धार्मिक/आस्थावान प्रभावीजन विभिन्न वैज्ञानिक स्वास्थ्य संगठनों के कार्यों को अपने समुदायों के साथ साझा कर सकते हैं और साथ ही इन संस्थाओं के तथ्यात्मक सूचनाओं को इन समुदायों में फैले भ्रांतियों और गलत धारणाओं को दूर करने और टीकों की स्वीकार्यता बढ़ने के लिए अपने समुदायों में साझा कर सकते हैं।

निम्न फ्लोचार्ट [7,9,11,15] टीकाकरण में आ रही स्थानीय बाधाओं को दूर करने, आवश्यकता आधारित विशिष्ट संदेशों को विकसित करने तथा विभिन्न सत्रों द्वारा आपसी जानकारी बढ़ाने के विभिन्न चरणों को दर्शाता है।

स्थानीय धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों की पहचान करें	स्थानीय धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों की त्वरित मैपिंग करें	प्रत्येक स्टेकहोल्डर समूहों से एक मुख्य व्यक्ति चुनें
स्टेकहोल्डर्स को टीकाकरण के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए आयोजित सत्र में आमंत्रित करें	सत्र में प्रत्येक धार्मिक /आस्था समूह से 3 -4 सदस्यों को आमंत्रित करे	सत्र के उद्देश्य को साझा तथा स्वास्थ्य कर्मियों और धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों के मध्य आपसी सीखों पर चर्चा करें
टीकाकरण में आ रही बाधाओं को सुनने के लिए सत्र आयोजित करें	धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों को उनके समुदाय में टीकाकरण सम्बन्धी स्थानीय बाधाओं को जानने के लिए आमंत्रित करें तथा उन्हें साझा करें व नोट करें	लोग टीकाकरण, सामाजिक वातावरण, और आदतों के बारें में क्या सोचते हैं उनका संज्ञान लें
चिन्हित बाधाओं को दूर करने के लिए चिकित्सकीय पैनल सत्र का आयोजन करें	लोगों की टीके सम्बन्धी सभी चिंताओं को दूर करने के लिए वैज्ञानिक/चिकित्सकीय प्रतिनिधियों के साथ परिचर्चा सत्र आयोजित करें	धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों को मौका दें ताकि वो इन पैनल परिचर्चाओं में अपनी भ्रान्तिओं और चिंताओं संबंधी सवालों को पूछ कर उनके स्पष्टीकरण प्राप्त कर सकें
समूहों को विशिष्ट संदेशों को बनाने /विकसित करने के लिए प्रेरित करिये	पैनल चर्चा के बाद लोगों को छोटे -छोटे समूहों में बांटिए जिसमें वैज्ञानिक /चिकित्सकीय प्रतिनिधि और धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजन दोनों शामिल हों	इन समूहों को सरल, स्पष्ट, और संक्षिप्त संदेशों को विकसित करने के लिए प्रेरित करिये जो कि स्वास्थ्यकर्मी और धार्मिक आस्थावान प्रभावीजन दोनों ही टीकों से सम्बंधित सामान्य सरोकारों /चिंताओं को दूर करने में प्रयोग कर सकें

नोट लेने के लिए नमूना /टेम्पलेट

टीकाकरण सम्बन्धी स्थानीय बाधाएं धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजन का चयन करें	**तथ्यात्मक वैज्ञानिक विवरण** स्थानीय बाधाओं पर प्रतिक्रिया	**टीकों से सम्बंधित सन्देश** चिकित्सा विज्ञान या धार्मिक /आस्थावान प्रभावीजनों द्वारा विकसित
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪
▪	▪	▪

कार्य योजना के टेम्पलेट/ नमूना

स्टेकहोल्डर्स के लिए कार्य योजना, चरण, और जिम्मेदारियां लिखने के लिए वर्कशीट

#	टीकों से सम्बंधित संदेशों को साझा करने के लिए मुख्य गतिविधियां	उत्तरदायी व्यक्ति	अपेक्षित समय सीमा
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			

संलग्नक /एनेक्सचर-4: सन्दर्भ सूची: टीकों के प्रति संकोच /हिचकिचाहट

1. ADRA. (2020). Biblical-Theological Guidance during COVID-19. Available at: https://jliflc.com/wpcontent/uploads/2020/06/Biblical-Theological-Guidance-during-COVID-1-Jun-20.pdf

2. American Muslim Health Professionals. (2021). Khutbah Guide: COVID-19 Vaccines & the Islamic Imperative to Protect One's Health & the Health of Others. Available at: https://amhp.us/vaccine/wpcontent/uploads/2021/07/Vaccine-Khutbah-Guide.pdf

3. Brewer NT, Chapman GB, Rothman AJ, Leask J, Kempe A. (2017). Increasing vaccination: putting psychological science into action. Psychol Sci Public Interest. 18(3):149–207.

4. Center for Disease Control. (2021). An Introduction to Motivational Interviewing for Healthcare Professionals. Available at: https://www.cdc.gov/vaccines/covid-19/hcp/engaging-patients.html

5. Costa JC, Weber AM, Darmstadt GL, Abdalla S, & Victora CG. (2020). Religious affiliation and immunization coverage in 15 countries in Sub-Saharan Africa. *Vaccine, 38*(5):1160- 23 1169. doi: 10.1016/j.vaccine.2019.11.024.

6. Dicastery for Promoting Integral Human Development: COVID-19 Vatican Commission. (2021). COVID-19 Vaccines: Resources for Church Leaders. Available at: https://www.humandevelopment.va/en/vaticancovid-19.html

7. FHI360. (2021) Message Framing Template: Demand Creation and Advocacy for COVID-19 Vaccine Acceptance and Uptake. Available at: https://www.fhi360.org/sites/default/files/media/documents/resource-message-framing-template.pdf

8. Grabenstein JD. (2013). What the world's religions teach, applied to vaccines and immune globulins. Vaccine. 2013 Apr 12;31(16):2011-23. doi: 10.1016/j.vaccine.2013.02.026. Epub 2013 Feb 26. PubMed PMID: 23499565.

9. Health Communication Capacity Collaborative. (2016). SBCC for Emergency Preparedness Implementation Kit. https://sbccimplementationkits.org/sbcc-in-emergencies/

10. Hesperian. (2021). Vaccines Prevent Illness. *Chapter in Where there is no Doctor*. Available at: https://en.hesperian.org/hhg/New_Where_There_Is_No_Doctor:Chapter_30:_Vaccines_Prevent_Illness

11. Kaiser Permanente. (2021). Human Centered Recommendations for Increasing Vaccine Uptake. Available at: https://www.aha.org/system/files/media/file/2021/06/Human-Centered-Recommendations-ForIncreasing-Vaccine-Uptake.pdf

12. Majaraj B. (2021). *Religion, vaccines, medical ethics and just distribution—a Hindu perspective.* Daily Maverick. Available at: https://www.dailymaverick.co.za/opinionista/2021-02-28-religion-vaccinesmedical-ethics-and-just-distribution-a-hindu-perspective/

13. Olivier J. (2014). *Local faith communities and immunization for community and health systems strengthening*. Scoping review report. Joint Learning Initiative on Faith and Local Communities. https://jliflc.com/wp-content/uploads/2014/09/LOCAL-FAITH-COMMUNITIES-AND-IMMUNIZATION-FORCOMMUNITY-AND-HEALTH-SYSTEMS.pdf

14. Surgo Ventures & Mary's Center. (2022). COVID-19 Vaccine Ambassador Training Toolkit.
15. The Compass. (2021). Communicating about COVID-19 Vaccines: A Technical Brief for Breakthrough ACTION Field Teams. Available at: https://thecompassforsbc.org/sbcc-tools/technical-brief-covid-19rumor-tracking-guidance-field-teams

16. UNICEF, Religions for Peace, Joint Learning Initiative on Faith & Local Communities. (2020). COVID-19 Practising our Faith Safely During a Pandemic: Resource Guide for Religious Leaders and Faith Communities. Available at: https://jliflc.com/wpcontent/uploads/2020/07/e98ce2_99dec5718c984cf496f7369fcdcd67a5.pdf

17. UNICEF. (2022). Immunization. Available at: https://www.unicef.org/immunization

18. United Methodist Health Ministry Fund. (2021). Faith in Vaccines: A Guide for Talking to your Congregation. Available at: https://healthfund.org/a/wp-content/uploads/Faith-In-Vaccines-COVID-19Guide-and-Toolkit.pdf

19. World Health Organization. (2020). Development of tools to measure behavioural and social drivers (BeSD) of vaccination: Progress Report. Available at: https://cdn.who.int/media/ docs/ defaultsource/immunization/besd_progress_report_june2020.pdf ?sfvrsn=10a67e75_3

20. World Health Organization. (2021). Vaccines and Immunization: What is Vaccination? Available at: https://www.who.int/news-room/questions-and-answers/item/vaccines-and-immunization-what-isvaccination

21. World Health Organization. (2020). Vaccine Explained. Available at: https://www.who.int/emergencies/diseases/novel-coronavirus-2019/covid-19-vaccines/explainers

22. World Health Organization Regional Office for Europe. (2015). Myths and Facts about Immunization. Available at: https://www.euro.who.int/__data/assets/pdf_file/0005/339620/Myths-and-facts.pdf

23. World Vision. (2021). Faith in action: Power of faith leaders to fight a pandemic. Available at: https://www.wvi.org/sites/default/files/2021-02/Faith_in_action_report_final_small.pdf

USAID FROM THE AMERICAN PEOPLE

MOMENTUM A Global Partnership for Health and Resilience

www.usaidmomentum.org

@USAID_MOMENTUM

@USAIDMOMENTUM

@USAID MOMENTUM